Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ
كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

(सूरत बक़रह:184)

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम पर रोज़े इसी तरह फ़र्ज़ कर दिए गए हैं जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम तक़्वा इख़्तियार करो।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 13

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

27 शाबान 1443 हिज्री कमरी, 31 अमान 1401 हिज्री शम्सी, 31 मार्च 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

रोज़े कवच हैं

(1794) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: रोज़े कवच हैं। अत: कोई व्यक्ति अश्लील बात न करे और न जहालत की बात, और यदि कोई आदमी उससे लड़े या गाली दे तो चाहिए कि उससे दोबार कहे कि मैं रोज़ेदार हूँ। उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है रोज़ादार के मुँह की बू अल्लाह तआला को मुश्क से ज़्यादा प्रिय है। (अल्लाह तआला फ़रमाता है) कि वह अपना खाना और अपना पीना और अपनी अभिलाषा मेरी ख़ातिर छोड़ देता है। रोज़े मेरे लिए हैं और मैं ही उसका बदला हूँ और नेकी का बदला दस गुना हैं।

बाबे रेयान रोज़ेदारों के लिए होगा

(1796) हज़रत सुहैल रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जन्नत में एक दरवाज़ा है जिस को रेयान कहते हैं। क़ियामत के दिन रोज़ादार उससे दाख़िल होंगे। उनके सिवा कोई इससे दाख़िल नहीं होगा। पूछा जाएगा : रोज़ादार कहाँ हैं? तो वे खड़े हो जाऐंगे। इन के सिवा कोई इस से दाख़िल नहीं होगा। अत: जब वे दाख़िल हो जाऐंगे तो वह बंद कर दिया जाएगा तो फिर कोई भी उस से दाख़िल नहीं होगा।

★ ★ ★ (.सही बुख़ारी, भाग 3, किताब अल् सौम, मुद्रित क़ादियान 2008 ई)

यह बात निहायत अफ़सोसनाक है कि यूक्रेन में जंग छिड़ गई है और हालात अत्यधिक भयानक रूप धारण कर चुके हैं

मैं दुनिया की बड़ी ताक़तों को सावधान करता चला आया हूँ कि उन्हें तारीख़ से, विशेषता बीसवीं सदी में होने वाली दो तबाहकुन वैश्विक जंगों से सबक़ हासिल करना चाहिए

मैं रूस, नेटो और समस्त बड़ी ताक़तों को पुरज़ोर तलक़ीन करता हूँ कि वे अपने समस्त प्रयास इन्सानियत को बचाने की ख़ातिर झगड़ों का अंत करने में करें और दूतावास से संबंधित माध्यमों से शांति का हल तलाश करें

रूस, यूक्रेन झगड़े के बारे में इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़

विश्वव्यापी इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ रूस /यूक्रेन के वर्तमान झगड़े के विषय में फ़रमाते हैं :

पिछले कई वर्षों से मैं दुनिया की बड़ी ताक़तों को सावधान करता चला आया हूँ कि उन्हें तारीख़ से, विशेषता बीसवीं सदी में होने वाली दो तबाहकुन विश्वव्यापी जंगों से सबक़ हासिल करना चाहिए। इस सिलसिले में मैं ने विभिन्न अक़्वाम के सरबराहों को पत्र लिख कर बड़ी ज़ोरदार तवज्जा दिलाई कि वे अपने क़ौमी और व्यक्तिगत लाभों को छोड़ कर समाज की हर सतह पर वास्तविक इन्साफ़ को क़ायम करते हुए दुनिया की अमन और शांति को प्राथमिकता दें।

यह बात निहायत अफ़सोसनाक है कि यूक्रेन में जंग छिड़ गई है और हालात इंतिहाई संगीन सूरत-ए-हाल धारण कर चुके हैं। तथा यह भी सम्भव है कि रूसी हुकूमत के आइन्दा इक़दामात और इस पर नेटो (nato) और बड़ी ताक़तों के रद्दे अमल के बायस यह जंग मज़ीद वुसअत इख़्तियार कर जाए। और इस में कोई शक नहीं कि इसके परिणाम इंतिहाई भयानक और हानिकारक होंगे। इसलिए यह वक़्त की अहम ज़रूरत है कि मज़ीद जंग और ख़ून रेज़ि से बचने की हर सम्भव कोशिश की जाए। अब भी वक़्त है कि दुनिया तबाही के दहाने से पीछे हट जाए। मैं रूस, नेटो (nato) और समस्त बड़ी ताक़तों को पुरज़ोर तलक़ीन करता हूँ कि वे अपनी समस्त कोशिशें इन्सानियत को बचाने की ख़ातिर झगड़ों को ख़त्म करने में करें और दूतावास के माध्यम से पुर अमन हल तलाश करें।

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का प्रमुख होने के नाते में केवल यही कर सकता हूँ कि दुनिया के सयासी नेतृत्व करने वालों को ध्यान इस ओर करवा दूं कि वह विश्वव्यापी अमन को प्राथमिकता देते हुए, समस्त मानव जाति की भलाई के लिए अपने क़ौमी लाभ और दुश्मनियों को दूर करे। इसलिए मेरी दिल से दुआ है कि दुनिया के हुकमरान होश से काम लें और इन्सानियत की बेहतरी के लिए प्रयास करें।

मैं दुआ करता हूँ कि आज भी और आइन्दा भी दुनिया का नेतृत्व करने वाले जंग, ख़ूँरेज़ी और तबाही के अज़ाब से मानवता को सुरक्षित रखने के लिए भरपूर प्रयास करेंगे। और मैं दिल की गहराई से दुआ करता हूँ कि बड़ी ताक़तों के लीडर और उनकी हुकूमतें ऐसे इक़दामात न उठाएं जो हमारे बच्चों और आने वाली नसलों के मुस्तक़बिल को तबाह करने वाले हों बल्कि उनकी हर कोशिश और प्रयास इस बात को विश्वसनीय बनाने के लिए होनी चाहिए कि हम अपनी आइन्दा नसलों के लिए ख़ुशहाल और पुर अमन दुनिया छोड़ कर जाएं।

मैं दुआ करता हूँ कि विश्वव्यापी राहनुमा वक़्त की नज़ाकत का एहसास करने वाले और दुनिया में शांति पैदा करने और इस्तिहकाम को यक़ीनी बनाने की ज़िम्मेदारी को बेहतरीन अंदाज़ से निभाने वाले हों। अल्लाह तआला समस्त मासूम और निहत्ते लोगों को अपनी हिफ़्ज़-ओ-अमान में रखे और दुनिया में वास्तविक और सदैव रहने वाला अमन क़ायम हो। आमीन।

मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस
विश्वव्यापी इमाम जमाअत अहमदिया मुस्लिमा

(धन्यवाद सहित अख़बार अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल लंदन)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

"ख़ुदा ने मुझे क़ुरआन का ज्ञान प्रदान किया है और इस ज़माना में उस ने क़ुरआन सिखाने के लिए मुझे दुनिया का उस्ताद निधोरित किया है। ख़ुदा ने मुझे इस उद्देश्य के लिए खड़ा किया है कि

मैं मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और क़ुरआन-ए-करीम के नाम को दुनिया के किनारों तक पहुंचाऊं और इस्लाम के मुक़ाबला में दुनिया के समस्त झूठे अदयान को हमेशा की शिकस्त दे दूं।"

भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद के मिस्दाक़ हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं और गुणों का ईमान अफ़रोज़ वर्णन

"?दुनिया ज़ोर लगा ले वे अपनी समस्त ताक़तों और जमईयतों को इकट्ठा कर ले। ईसाई बादशाह भी और उसकी हुकूमतें भी मिल जाएं। यूरोप भी और अमरीका भी इकट्ठा हो जाए। दुनिया की समस्त बड़ी बड़ी मालदार और ताक़तवर कौमें इकट्ठी हो जाएं और वे मुझे इस उद्देश्य में नाकाम करने के लिए एक जुट हो जाएं फिर भी मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ कि वे मेरे मुक़ाबले में असफल रहेंगी और ख़ुदा मेरी दुआओं और प्रयासों के सामने उनकी समस्त योजनाओं और मकरों और षड्यंत्रों को ध्वस्त कर देगा और ख़ुदा मेरे द्वारा अथवा मेरे शागिर्दों और इत्तिबा के द्वारा से इस भविष्यवाणी की सच्चाई प्रमाणित करने के लिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नाम के अधीन और इस्लाम की सच्चाई की इज़्ज़त को स्थापित करेगा और उस वक़्त तक दुनिया को नहीं छोड़ेगा जब तक इस्लाम फिर अपनी पूरी शान के साथ दुनिया में स्थापित न हो जाए और जब तक मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को फिर दुनिया का ज़िन्दा नबी स्वीकार न कर लिया जाए।"

अल्लाह तआला ने आपको उलूम से ऐसा परिपूर्ण किया कि आपकी बावन वर्ष की ज़िंदगी इस पर गवाह है कि चाहे वह दीनी विषय का प्रश्न हो या किसी दुनियावी विषय का, जब भी आपको किसी विषय पर लिखने और बोलने का कहा गया आपने इलम-ओ-इर्फ़ान के दरिया बहा दिए

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 फ़रवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद के हवाले से जलसे भी करते हैं और इस दिन को याद भी रखते हैं। एक बेटे के जन्म की यह भविष्यवाणी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुश्मनों के इस्लाम पर आरोपों के उत्तर में अल्लाह तआला से ख़बर पाकर की थी कि इस्लाम के दुश्मन कहते हैं कि इस्लाम कोई निशान नहीं दिखाता। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं ख़ुदा तआला से सूचना प कर कहता हूँ कि एक बड़ा निशान इस्लाम की सदाक़त का जो मेरे माध्यम से पूरा होगा वह मेरे एक बेटे का जन्म है जो लंबी आयु पाएगा। इस्लाम की ख़िदमत करेगा। और बताया कि ये ये विशेषताएं उस में होंगी और तक़रीबन बावन, त्रिप्पन विशेषताएं वर्णन फ़रमाई और यह कोई मामूली भविष्यवाणी नहीं थी। एक निर्धारित समय भी बताया और बहरहाल इस निर्धारित समय में वह बेटा पैदा हुआ और उसने लंबी उम्र भी पाई और उसे इस्लाम की ग़ैरमामूली ख़िदमत की तौफ़ीक़ भी मिली। हर वर्ष इस भविष्यवाणी के हवाले से मुख़्तलिफ़ पहलूओं पर जमाअती जलसों में रोशनी डाली जाती है। इस वर्ष भी इन शा अल्लाह ये सब कुछ होगा। मुख़्तलिफ़ जमाअतों के जलसे होंगे। इसी तरह एम.टी.ए पर भी प्रोग्राम आते हैं। तफ़सीलात तो वहां से पता लगती जाएँगी। इस वक़्त मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद के अपने शब्दों में आपकी आरंभिक ज़िंदगी कैसी थी और आपकी सेहत का क्या हाल था और आपके साथ अल्लाह तआला का क्या व्यवहार था, इस बारे में कुछ हवाले पेश करूँगा।

यह भविष्यवाणी लंबी आयु पाने वाले बच्चे के बारे में थी। भविष्यवाणी थी कि एक बच्चा लंबी आयु पाएगा। इस लंबी आयु पाने वाले बच्चा की सेहत की हालत का अनुमान आप इस बात से कर सकते हैं कि हज़रत मुस्लेह मौऊद स्वयं ही फ़रमाते हैं कि बचपन में मेरी सेहत अत्यधिक कमज़ोर थी। पहले काली खांसी हुई और फिर मेरी सेहत ऐसी गिर गई कि ग्यारह बारह वर्ष की आयु तक मैं मौत और जीवन के संघर्ष में ग्रस्त रहा और आम तौर पर यही समझा जाता रहा कि मेरी ज़्यादा लंबी आयु नहीं हो सकती। ईसी दौरान में मेरी आँखें दुखने लगी और इस क़दर दुखी कि मेरी एक आँख क़रीबन मारी गई। अर्थात इस में से नज़र आना बंद हो गया। इस लिए इस में से मुझे बहुत कम-नज़र आता है। जब आप अलैहिस्सलाम यह फ़र्मा रहे थे तो आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अभी भी बहुत कम-नज़र आता है। फिर जब मैं और बड़ा हुआ तो नियमित छः सात माह तक मुझे बुख़ार आता रहा। और सिल और दिक का रोग मुझे क़रार दिया गया। अर्थात टी. बी. का मरीज़ बताया गया और फ़रमाते हैं कि इन कारणों से बाक़ायदा पढ़ाई भी नहीं कर सकता था। स्कूल नहीं जाता था। लाहौर के ही मास्टर फ़क़ीर उल्लाह साहिब हैं, लाहौर में ही आप अलैहिस्सलाम यह लैक्चर दे रहे थे जिनकी मुस्लिम टाउन में कोठी है फ़रमाते हैं कि हमारे स्कूल में हिसाब पढ़ाया करते थे। उन्होंने एक दफ़ा मेरे विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास शिकायत की कि यह पढ़ने नहीं आता और अक्सर स्कूल से ग़ायब रहता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मैं डरा कि शायद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नाराज़ होंगे परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाने लगे कि मास्टर साहिब उसकी सेहत कमज़ोर रहती है हम इतना ही शुक्र करते हैं कि यह कभी कभी स्कूल में चला जाता है और कोई बात उसके कानों में पड़ जाती है। ज़्यादा ज़ोर उस पर न दें। फ़रमाते हैं कि बल्कि मुझे यह भी याद है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भी फ़रमाया कि हमने हिसाब सिखा कर उसे क्या करना है। क्या हमने उससे कोई दुकान करानी है?

तो यह थी आप अलैहिस्सलाम की बचपन की सेहत की हालत और स्कूल जाने की हालत।

कौन ऐसी हालत में लंबी आयु की ज़मानत दे सकता है लेकिन न केवल लंबी आयु पाई बल्कि यह भी इस में भविष्यवाणी थी कि उलूम ज़ाहिरी और बातिनी से परिपूर्ण किया जाएगा।

ऐसे हालात में कौन कह सकता है कि उलूम भी उसको हासिल होंगे। बहरहाल आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि क़ुरआन और हदीस पढ़ लेगा तो काफ़ी है। कहते हैं कि उदेश्य मेरी सेहत ऐसी कमज़ोर थी कि दुनिया के इलम पढ़ने के विषय में बिल्कुल ना-काबिल था। मेरी नज़र भी कमज़ोर थी। मैं प्राइमरी, मिडल और इंटरैंस की परीक्षा में फ़ेल हुआ। किसी इमतिहान में पास नहीं हुआ परन्तु ख़ुदा ने मेरे बारे में ख़बर दी थी कि मैं उलूम-ए-ज़ाहिरी और बातिनी से परिपूर्ण किया जाऊँगा। इस लिए बावजूद इस के कि संसारिक ज्ञान में से कोई इलम मैंने नहीं पढ़ा अल्लाह तआला ने ऐसी महान इलमी किताबें मेरे क़लम से लिखवाई कि दुनिया उनको पढ़ कर हैरान है और वे यह स्वीकार करने पर विवश है कि इससे बढ़कर इस्लामी मसायल के सम्बन्ध में और कुछ नहीं लिखा जा सकता। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अभी तफ़सीर-ए-कबीर के नाम से मैंने क़ुरआन-ए-करीम की तफ़सीर का एक हिस्सा लिखा है उसे पढ़ कर बड़े बड़े मुख़ालिफ़ों ने भी स्वीकार किया है कि इस जैसी आज तक कोई तफ़सीर नहीं लिखी गई। फिर हमेशा मैं लाहौर में आता रहता हूँ और यहां के रहने वाले जानते हैं कि मुझ से कॉलिजों के प्रोफ़ैसर मिलने आते हैं। स्टूडैंटस मिलने आते हैं। डाक्टर मिलने आते हैं। मशहूर प्लेडर और वकील मिलने आते हैं। परन्तु आज तक एक दफ़ा भी ऐसा नहीं हुआ कि किसी बड़े से बड़े मशहूर ज्ञानी ने मेरे सामने इस्लाम और क़ुरआन पर कोई एतराज़ किया हो और मैंने इस्लाम और क़ुरआन की तालीम की रोशनी में ही उसे निरुत्तर न कर दिया हो और उसे यह तस्लीम न करना पड़ा हो कि वास्तव में इस्लाम की तालीम पर कोई हक़ीक़ी आरोप नहीं हो सकता। यह केवल अल्लाह तआला का फ़ज़ल है जो मेरे शामिल-ए-हाल है अन्यथा मैंने दुनयावी उलूम के लिहाज़ से कोई इलम नहीं सीखा लेकिन मैं इस बात से इंकार नहीं कर सकता कि ख़ुदा ने मुझे अपने पास से इलम दिया और ख़ुद मुझे हर किस्म के ज़ाहिरी और बातिनी उलूम से हिस्सा अता फ़रमाया।

फिर आप अलैहिस्सलाम उलूम-ए- ज़ाहिरी और बातिनी से परिपूर्ण किए जाने के

बारे में

कि किस तरह अल्लाह तआला ने ज्ञान सिखाए, फ़रमाते हैं कि मैं अभी बचा ही था कि मैंने सवप्न में देखा कि एक घंटी बजी है और इस में से टन की आवाज़ पैदा हुई है जो बढ़ते बढ़ते एक तस्वीर के फ्रेम की सूरत इख़तियार कर गई। फिर मैं ने देखा कि इस फ्रेम में से एक तस्वीर प्रकट हुई। थोड़ी देर के बाद तस्वीर हिलनी शुरू हुई और फिर सहसा इस में से कूद कर एक वजूद मेरे सामने आ गया और उसने कहा मैं ख़ुदा का फ़रिश्ता हूँ और तुम्हें क़ुरआन-ए-करीम की तफ़सीर सिखाने के लिए आया हूँ। मैंने कहा सिखाओ। तब उसने सूरत फ़ातिहा की तफ़सीर सिखानी शुरू कर दी। वह सिखाता गया, सिखाता गया और सिखाता गया। यहां तक कि जब اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ तक पहुंचा तो कहने लगा कि आज तक जितने मुफ़स्सर गुज़रे हैं इन सब ने केवल इस आयत तक तफ़सीर लिखी है लेकिन मैं तुम्हें उस के आगे भी तफ़सीर सिखाता हूँ। इस लिए उसने सारी सूरत फ़ातिहा की तफ़सीर मुझे सिखा दी।

इस स्वप्न के अर्थ वास्तव में यही थे कि क़ुरआन को समझने का ज्ञान मेरे अंदर रख दिया गया है। इस लिए यह प्रतिभा मेरे अंदर इस क़दर है कि

मैं यह दावा करता हूँ कि जिस मज्लिस में चाहो मैं यह दावा करने के लिए तैयार हूँ कि सूरत फ़ातिहा से ही मैं समस्त इस्लामी उलूम वर्णन कर सकता हूँ।

आप अलैहिस्सलाम खुल के पब्लिक में यह तक़रीर कर रहे हैं, दुनिया को बता रहे हैं, चैलेंज दे रहे हैं लेकिन कभी नहीं हुआ कि आप अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले में इस तरह कोई आया हो। फिर फ़रमाते हैं कि मैं अभी छोटा ही था स्कूल में पढ़ा करता था कि हमारे स्कूल की फूटबाल टीम अमृतसर के ख़ालसा कॉलेज की टीम से खेलने के लिए गई। मुक़ाबला हुआ और हमारी टीम जीत गई। इस पर बावजूद इस मुख़ालफ़त के जो मुस्लमान हमारी जमाअत के साथ रखते हैं चूँकि एक रंग में मुस्लमानों का सम्मान हुआ था इस लिए अमृतसर के एक अमीर लोगों ने हमारी टीम को चाय की दावत दी। जब हम वहां गए तो मुझे तक़रीर करने के लिए खड़ा कर दिया गया। मैंने इस तक़रीर के लिए कोई तैयारी नहीं की थी। जब मुझे खड़ा किया गया तो तुरंत मुझे फ़रिश्ते की तफ़सीर सिखाने वाला यह स्वप्न याद आ गया। तो पहले मैंने उसके ऊपर ख़ुदा तआला से दुआ की कि हे ख़ुदा तेरा फ़रिश्ता मुझे स्वप्न में सूरत फ़ातिहा की तफ़सीर सिखा गया था। आज मैं इस बात परीक्षा लेना चाहता हूँ कि यह ख़ाब तेरी तरफ़ से था या मेरे नफ़स का धोखा था।

अगर यह ख़ाब तेरी तरफ़ से था तो तू मुझे सूरत फ़ातिहा का आज कोई ऐसा नुक्ता बता जो इस से पहले दुनिया के किसी मुफ़स्सिर ने वर्णन न किया हो।

इस लिए इस दुआ के तुरंत बाद ख़ुदा तआला ने मेरे दिल में एक नुक्ता डाला और मैंने कहा देखो क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला ने यह दुआ सिखाई है غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَ لَا الضَّآلِّيۡنَ। हे मुसलमानो तुम पाँच नमाज़ों में और अपनी नमाज़ की हर रकात में यह दुआ किया करो कि हम मग़ज़ूब और ज़ाल न बन जाएं। मग़ज़ूब के अर्थ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हदीसों में स्वयं वर्णन फ़रमाए हैं। इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मग़ज़ूब के अर्थ हैं यहूद और ज़ाल के अर्थ हैं नसारा। अत: غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ से मुराद यह है कि इलाही हम यहूदी न बन जाएं और وَ لَا الضَّآلِّيۡنَ से मुराद यह है कि हम नसारा न बन जाएं। इस बात की मज़ीद वज़ाहत इस बात से भी होती है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि इस उम्मत में एक मसीह आएगा। अत: जो लोग उसका इंकार करेंगे वे अवश्य यहूद सिफ़त बन जाऐंगे। दूसरी तरफ़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि ईसाइयत का फ़ित्ना एक ज़माना में ख़ास तौर पर बढ़ जाएगा। लोग रोटी के लिए, मुलाज़मत के लिए, सोसाइटी में इज़्ज़त हासिल करने के लिए ईसाइयत इख़तियार कर लेंगे या धोखा खा कर और अपने मज़हब की तालीम को न समझ कर ईसाइयत स्वीकार कर लेंगे। परन्तु यह अजीब बात है कि सूरत फ़ातिहा मक्का में नाज़िल हुई और उस वक़्त न ईसाई इस्लाम के ज़्यादा विरोधी थे और ना यहूदी इस्लाम के ज़्यादा मुख़ालिफ़ थे। उस वक़्त सबसे ज़्यादा मुख़ालिफ़त मक्का के बुत परस्तों की तरफ़ से की जाती थी परन्तु यह दुआ नहीं सिखाई गई कि इलाही हम बुत परस्त न बन जाएं बल्कि दुआ यह सिखाई गई है कि इलाही हम यहूदी या नसारा न बन जाएं। इस से साफ़ मालूम होता है कि इस सूरत के द्वारा अल्लाह तआला ने यह भविष्यवाणी फ़र्मा दी थी कि मक्का के बुत परस्त हमेशा के लिए मिटा दिए जाऐंगे और उनका नामोनिशान बाक़ी नहीं रहेगा। अत: इस बात की ज़रूरत ही नहीं कि उनके सम्बन्ध में मुस्लमानों को कोई दुआ सिखाई जाए। हाँ यहूदियत और ईसाइयत, दोनों बाक़ी रहेंगी और तुम्हारे लिए ज़रूरी होगा कि उनके फ़ित्ना से बचने के लिए हमेशा दुआएं करते रहो। जब मेरी यह तक़रीर ख़त्म हो चुकी तो बाद में बड़े बड़े अमीर लोग मुझे मिले और कहने लगे कि आपने क़ुरआन ख़ूब पढ़ा हुआ है। हमने तो अपनी सारी आयु में यह नुक्ता पहली दफ़ा सुना है। इस लिए घटना यही है कि सारी तफ़सीरों को देख लो किसी मुफ़स्सिर क़ुरआन ने आज तक यह नुक्ता वर्णन नहीं किया। हालाँकि मेरी उम्र उस वक़्त बीस वर्ष के क़रीब थी जब अल्लाह तआला ने यह नुक्ता मुझ पर खोला। उद्देश्य अल्लाह तआला ने अपने फ़रिश्ता के द्वारा मुझे क़ुरआन-ए-करीम का इलम अता फ़रमाया है और मेरे अंदर उसने प्रतिभा पैदा कर दी है कि जिस तरह किसी को ख़ज़ाना की कुंजी मिल जाती है ईसी तरह मुझे क़ुरआन-ए-करीम के उलूम की कुंजी मिल चुकी है। दुनिया का कोई आलम नहीं जो मेरे सामने आए और मैं क़ुरआन-ए-करीम की फ़ज़ीलत उस पर ज़ाहिर न कर सकूं। यह लाहौर शहर है। लाहौर में आप अलैहिस्सलाम तक़रीर फ़र्मा रहे थे यहां यूनीवर्सिटी मौजूद है। कई कॉलेज यहां खुले हुए हैं, बड़े बड़े उलूम के माहिर इस जगह पाए जाते हैं। मैं इन सबसे कहता हूँ कि दुनिया के किसी इलम का माहिर मेरे सामने आजाए, दुनिया का कोई प्रोफ़ैसर मेरे सामने आ जाए, दुनिया का कोई विज्ञानिक मेरे सामने आ जाए और वे अपने उलूम के द्वारा क़ुरआन-ए-करीम पर हमला कर के देख ले मैं अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उसे ऐसा उत्तर दे सकता हूँ कि दुनिया स्वीकार करेगी कि इस के एतराज़ का रद्द हो गया और मैं दावा करता हूँ कि मैं ख़ुदा के कलाम से ही उस को उत्तर दूँगा और क़ुरआन-ए-करीम की आयात के द्वारा से ही उसके आरोपों को रद्द कर के दिखा दूँगा।

(उद्धरित मैं ही मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी का मिस्दाक़ हूँ, अनवारुल उलूम भाग 17 पृष्ठ 213 से 217)

यह वाक़िया जैसा कि आप अलैहिस्सलाम ने बताया उस वक़्त का है जब आप अलैहिस्सलाम की आयु बीस वर्ष की थी और उस वक़्त आप अलैहिस्सलाम का ख़ुदा पर विश्वस्त पूर्ण हो चुका था लेकिन यह पूर्ण विश्वास किस आयु में हुआ, इस बारे में स्वयं हज़रत मुस्लेह मौऊद वर्णन फ़रमाते हैं जिससे यह भी पता चलता है कि

अल्लाह तआला स्वयं बचपन से आप अलैहिस्सलाम को मुस्लेह मौऊद बनने का मिस्दाक़ बना रहा था।

इस लिए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि वर्ष 1900 ई. मेरे हृदय को इस्लामी अहकाम की तरफ़ तवज्जा दिलाने का माध्यम हुआ है। उस वक़्त में ग्यारह वर्ष का था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए कोई व्यक्ति छींट की किस्म के कपड़े का एक जुब्बा लाया। मैंने आप से वह जुब्बा ले लिया। किसी और ख़्याल से नहीं बल्कि इसलिए कि उसका रंग और उसका नक़्श मुझे पसंद था। मैं उसे पहन नहीं सकता था क्योंकि उसके दामन मेरे पांव के नीचे लटकते रहते थे। जब मैं ग्यारह वर्ष का हुआ और उन्नीस सौ साल ने दुनिया में क़दम रखा अर्थात उन्नीस सौ ईसवी ने दुनिया में क़दम रखा तो मेरे दिल में यह ख़्याल पैदा हुआ कि मैं ख़ुदा तआला पर क्यों ईमान लाता हूँ? उसके वजूद का क्या सबूत है?

मैं देर तक रात के वक़्त इस विषय पर सोचता रहा। आख़िर दस ग्यारह बजे मेरे दिल ने निर्णय किया कि हाँ एक ख़ुदा है

वह घड़ी मेरे लिए कैसी ख़ुशी की घड़ी थी। कितनी ख़ुशी का वक़्त था। जिस तरह एक बच्चे को उसकी माँ मिल जाए तो उससे उसे ख़ुशी होती है इसी तरह मुझे ख़ुशी थी कि मेरा पैदा करने वाला मुझे मिल गया। ग्यारह वर्ष की आयु में यह सोच थी। श्रवण ईमान इलमी ईमान से परिवर्तित हो गया। अर्थात सुना हुआ जो ईमान था वह इलमी ईमान से परिवर्तित हो गया। बहर हाल कहते हैं मैं अपने जामा में फूला नहीं समाता था। मैंने उस वक़्त अल्लाह तआला से दुआ की और एक अरसा तक करता रहा कि ख़ुदाया मुझे तेरी ज़ात के विषय में कभी संदेह पैदा न हो। उस वक़्त मैं ग्यारह वर्ष का था, आज मैं पैंतीस वर्ष का हूँ परन्तु आज भी मैं इस दुआ को क़दर की निगाह से देखता हूँ। मैं आज भी यही कहता हूँ ख़ुदाया तेरी ज़ात के विषय में मुझे कोई संदेह पैदा न हो। हाँ उस वक़्त मैं बच्चा था अब मुझे ज़्यादा अनुभव है। अब मैं इस क़दर ज़्यादती करता हूँ कि ख़ुदाया मुझे तेरी ज़ात के सम्बन्ध में हक़्कुल-यक़ीन पैदा हो। बहरहाल आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि बात कहाँ से कहाँ चली गई। मैं लिख रहा था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक जुब्बा मैंने मांग लिया था, जब मेरे दिल में ख़्यालात की वे मौजें पैदा होनी शुरू हुईं जिनका मैं ने ऊपर वर्णन किया है तो एक दिन सुबह के वक़्त या सूरज निकलने के बाद के वक़्त मैंने वुज़ू किया और वह जुब्बा इस वजह से नहीं कि ख़ूबसूरत है बल्कि इस वजह से कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का है और पवित्र है पहन लिया। यह पहला एहसास मेरे दिल में ख़ुदा तआला के भेजे हुए के मुक़द्दस होने का था। फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैंने उस वक़्त फिर दरवाज़ा बंद कर लिया और ख़ूब रो रो कर दुआ की, नफ़ल पढ़े।

(उद्धरित याद-ए-अय्याम, अनवारुल उलूम भाग 8 पृष्ठ 365-366)

इसका एक और जगह इस तरह आपने विस्तार से फ़रमाया है। ग्यारह वर्ष की आयु में ख़ुदा तआला की पहचान किस तरह हुई।

फ़रमाते हैं कि मैं ग्यारह वर्ष का था जब अल्लाह तआला ने मुझे अपने फ़ज़ल से

यह तौफ़ीक़ अता फ़रमाई कि मैं अपने मत को ईमान से बदल लूं। मग़रिब के बाद का वक़्त था। मैं अपने मकान में खड़ा था कि सहसा मुझे ख़्याल आया कि मैं इसलिए अहमदी हूँ कि जमाअत अहमदिया का संस्थापक मेरे बाप हैं या इसलिए अहमदी हूँ कि अहमदियत सच्ची है और यह सिलसिला ख़ुदा तआला का क़ायम करदा है। यह ख़्याल आने के बाद मैं ने निर्णय किया कि मैं इस बात पर ग़ौर कर के यहां से निकलूँगा और अगर मुझे यह पता लग गया कि अहमदियत सच्ची नहीं तो मैं अपने कमरे में दाख़िल नहीं हूँगा बल्कि यहीं सेहन से बाहर निकल जाऊँगा। यह ग्यारह साल के बच्चे की एक सोच थी। कहते हैं बहरहाल यह निर्णय करके मैं ने ग़ौर करना शुरू किया और क़ुदरती तौर पर इसके नतीजा में कुछ तर्कल मेरे सामने आए जिन पर मैं ने गौर किया। कभी एक दलील दूं उसे तोड़ दूं। फिर दूसरी दलील दूं उसे रद्द कर दूं। फिर तीसरी दलील दूं और उसे तोड़ूँ यहां तक कि होते होते यह प्रश्न मेरे सामने आया कि क्या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा तआला के सच्चे रसूल थे और क्या मैं उनको इसलिए सच्चा मानता हूँ कि मेरे माँ बाप का यह अक़ीदा है कि वह सच्चे हैं या मैं उनको इसलिए सच्चा मानता हूँ कि मुझ पर तर्कों की दृष्टि से यह रोशन हो चुका है कि वाक्य में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रास्तबाज़ रसूल हैं। जब यह सवाल मेरे सामने आया तो मेरे दिल ने कहा अब मैं इस बात का भी निर्णय कर के रहूँगा। इस के बाद क़ुदरती तौर पर ख़ुदा तआला के विषय में मेरे दिल में प्रश्न पैदा हुआ और मैं ने कहा यह सवाल भी हल तलब है कि आया मैं ख़ुदा तआला को यूंही अक़ीदे के तौर पर मानता हूँ या सच-मुच की हक़ीक़त मुझ पर मुनकशिफ़ हो चुकी है कि दुनिया का एक ख़ुदा है। तब अल्लाह तआला के प्रश्न पर भी मैं ने ग़ौर करना शुरू किया और मेरे दिल ने कहा कि यदि ख़ुदा है तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सच्चे रसूल हैं और अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सच्चे रसूल हैं तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी सच्चे हैं और अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सच्चे हैं तो फिर अहमदियत भी यक़ीनन सच्ची है और अगर दुनिया का कोई ख़ुदा नहीं फिर उनमें से कोई भी सच्चा नहीं। बहरहाल कहते हैं मैं ने निर्णय कर लिया कि आज मैं इस सवाल को हल करके रहूँगा और अगर मेरे दल ने यही निर्णय किया कि ख़ुदा नहीं तो फिर मैं अपने घर में नहीं रहूँगा बल्कि फ़ौरन बाहर निकल जाऊँगा। कहते हैं कि यह निर्णय कर के मैं ने सोचना शुरू कर दिया और सोचता चला गया। अपनी आयु के लिहाज़ से छोटी आयु थी मैं इस सवाल का कोई उचित उत्तर न दे सका परन्तु फिर भी मैं ग़ौर करता चला गया यहां तक कि मेरा दिमाग़ थक गया।

उस वक़्त मैं ने आसमान की तरफ़ नज़र उठाई। उस दिन बादल नहीं थे। अब अल्लाह तआला आपको इस तरह सिखाना चाहता था। कहते हैं आसमान जो अत्यधिक साफ़ था और सितारे अत्यधिक सुन्दरता के साथ स्पष्ट चमक रहे थे। एक थके हुए दिमाग़ के लिए इस से ज़्यादा प्रसन्नता प्रदान करने वाला और कौन सा दृश्य हो सकता है। मैं थका हुआ था। आसमान देखता रहा। सितारों का आनन्द लेता रहा था। तो मैं ने भी इन सितारों को देखना शुरू कर दिया। यहां तक कि मैं इन सितारों में खो गया। थोड़ी देर के बाद जब फिर मेरे दिमाग़ को तरोताज़गी हासिल हुई तो मैंने अपने दिल में कहा कि कैसे अच्छे सितारे हैं परन्तु इन सितारों के बाद क्या होगा? मेरे दिमाग़ ने इसका यह उत्तर दिया कि उनके बाद और सितारे होंगे फिर मैंने कहा उनके बाद क्या होगा? इस का उत्तर भी मेरे दिल ने यही दिया कि इसके बाद और सितारे होंगे। फिर मेरे दिल ने कहा अच्छा तो फिर इसके बाद क्या होगा? मेरे दिमाग़ ने फिर यही उत्तर दिया कि उनके बाद और सितारे होंगे। मैं ने कहा अच्छा तो फिर इसके बाद क्या होगा? इसका भी वही उत्तर मेरे दिल और दिमाग़ ने दिया कि कुछ और सितारे होंगे। तब मेरे दिल ने कहा कि यह क्योंकर हो सकता है कि एक के बाद दूसरे और दूसरे के बाद तीसरे और तीसरे के बाद चौथे सितारे हों। क्या यह सिलसिला कहीं ख़त्म नहीं होगा। अगर ख़त्म होगा तो उसके बाद क्या होगा? यही वह सवाल है जिसके सम्बन्ध में अक्सर लोग हैरान रहते हैं और वे कहते हैं कि हम जो कहते हैं कि ख़ुदा असीमित है इस के क्या अर्थ हैं? और हम जो कहते हैं कि ख़ुदा अबदी है इसके क्या अर्थ हैं? आख़िर कोई न कोई हद तो होनी चाहिए। यही सवाल मेरे दिल में सितारों के विषय में पैदा हुआ और मैं ने कहा कि आख़िर यह कहीं ख़त्म भी होते हैं या नहीं। अगर होते हैं तो इसके बाद क्या है और अगर ख़त्म नहीं होते तो यह क्या सिलसिला है जिसकी कोई इंतिहा नहीं। जब मेरा दिमाग़ यहां तक पहुंचा तो मैंने कहा ख़ुदा की हस्ती के विषय में महिदूद और ग़ैर महिदूद का प्रश्न बिल्कुल व्यर्थ है। तुम ख़ुदा तआला को जाने दो इन सितारों के विषय में क्या कहोगे मेरी आँखों के सामने ये पड़े हैं। अगर हम उनको महिदूद कहते हैं तो महिदूद वह होता है जिसके बाद दूसरी चीज़ शुरू हो जाए। अत: सवाल यह है कि अगर एक यह महिदूद हैं तो उनके बाद क्या है। फिर अगर वह महिदूद है तो उसके बाद क्या है और अगर कहीं कहो कि ये ग़ैर महिदूद हैं तो अगर सितारों की ग़ैर महदुदियत का इन्सान क़ायल हो सकता है तो ख़ुदा तआला की ग़ैर महदुदीयत का क्यों क़ायल नहीं हो सकता? तब मेरे दिल ने कहा कि हाँ वाक़्य में ख़ुदा मौजूद है क्योंकि उसने क़ानून-ए-क़ुदरत में वही आरोप रख दिया है जो उसकी ज़ात पर पैदा होता है और उस ने बता दिया है कि तुम मुझे अदृश्य चीज़ समझ कर अगर यह आरोप लगाते हो तो फिर वे चीज़ें जो तुम्हें नज़र आ रही हैं उनके सम्बन्ध में तुम्हारा क्या उत्तर है जबकि वही एतराज़ जो तुम मुझ पर करते हो उन पर भी लागू होता है और तुम्हारे पास इसका कोई उत्तर नहीं। तुम ख़ुदा तआला के सम्बन्ध में तो बे-तकल्लुफ़ी से यह कह दोगे कि हमारी समझ में यह बात नहीं आती कि वह ग़ैर महिदूद है। दूसरी जगह आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इस दलील से जब ख़ुदा तआला का वजूद मुझ पर साबित हो गया तो फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चाई और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त भी मुझ पर स्पष्ट हो गई।

(उद्धरित ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 19 पृष्ठ 689 से 692)

बहरहाल यह भी अल्लाह तआला का आपको उलूम से परिपूर्ण करने का एक सबूत है। एक मामूली पढ़े हुए बच्चे के दिल में इस तरह प्रश्न पैदा किए और फिर स्वयं मार्गदर्शन भी फ़रमाया।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत मुस्लेह मौऊद के बारे में क्या ख़्यालात रखते थे,

इसका प्रकटन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया है। इस से लगता है कि आप अलैहिस्सलाम यही समझते थे कि यह बच्चा मुस्लेह मौऊद होगा, मुस्लेह मौऊद का मिस्दाक़ बनेगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद एक दो वाक़ियात का वर्णन करते हैं। कहते हैं कि अरसा हुआ जबकि पहले-पहल मैं ने चंद एक दोस्तों के साथ मिलकर पत्रिका तशहीज़ुल अज़हान जारी किया था। इस पत्रिका को अवगत कराने के लिए जो मज़मून मैंने लिखा जिसमें उसके प्रारम्भ का उद्देश्य वर्णन किया वह जब प्रकाशित हुआ तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हुज़ूर उसकी विशेष प्रशंसा की और किया किया कि यह मज़मून इस काबिल है कि हज़ूर उसे ज़रूर पढ़ें। इस लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मस्जिद मुबारक में वह पत्रिका मंगवाई और ग़ालिबन मौलवी मुहम्मद अली साहिब से वह लेख पढ़वा कर सुना और तारीफ़ की लेकिन इस के बाद जब मैं हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु से मिला। पहले तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सामने तारीफ़ कर दी थी लेकिन बाद में ज़ाती तौर पर फिर फ़रमाया कि मियां तुम्हारा लेख बहुत अच्छा था परन्तु मेरा दिल ख़ुश नहीं हुआ और फ़रमाया कि हमारे वतन में एक मिसल मशहूर है कि ऊंट चालीस का और टोडा बतालिस। अर्थात एक ऊंट की क़ीमत कम है और टोडे की, उसके बच्चे की उस से दो रुपय ज़्यादा है। तुमने यह कहावत पूरी नहीं की। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं मैं तो इतनी पंजाबी नहीं जानता था। इस का अर्थ नहीं समझ सकता था। इसलिए मेरे चेहरे पर हैरत के आसार देखकर हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया शायद तुमने इसका अर्थ नहीं समझा। फ़रमाया कि हमारे इलाक़े की मिसाल है कि कोई व्यक्ति ऊंट बेच रहा था और साथ ऊंट का बच्चा भी था जिसे इस इलाक़े में टोडा कहते हैं। किसी ने उस से क़ीमत पूछी तो उसने कहा कि ऊंट की क़ीमत तो चालीस रुपय है परन्तु टोडे की बयालिस रुपय है। उसने दरयाफ़त किया कि यह क्या बात है? उसने कहा कि टोडा ऊंट भी है और बच्चा भी है। इसी तरह तुम्हारे सामने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तसनीफ़ बराहीन अहमदिया मौजूद थी। जब यह लेखनी की गई तो उस वक़्त आप के सामने अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सामने कोई ऐसा इस्लामी लिटरेचर मौजूद नहीं था परन्तु तुम्हारे सामने यह मौजूद थी और उम्मीद थी कि तुम इस से बढ़कर कोई चीज़ लाओगे, इस से फ़ायदा उठाओगे। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं अवतार से

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

बढ़कर इलम तो कोई क्या ला सकता है। (यह सवाल नहीं था।) सिवाए इसके कि उनके गुप्त ख़ज़ानों को निकाल निकाल कर पेश करते रहें। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु का अर्थ यह था कि

बाद में आने वाली नसलों का काम यही होता है कि पिछली बुनियादों को ऊंचा करते रहें।

अब हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु आपकी सेहत की हालत को भी जानते थे, इलम को भी जानते थे। इस के बावजूद आपके बारे में इतने आला ख़्यालात रखना बताता है कि यक़ीनन आप समझते थे और आपको पता था कि यह बच्चा ऐसा है। और इस लड़के में इतनी सलाहियत है कि यह उच्च कोटि के लेख लिख सकता है। बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि यह एक ऐसी बात है कि जिसे आइन्दा नसलें अगर ज़हनों में रखें ख़ुद भी बरकात और फ़ज़ल हासिल कर सकती हैं और क़ौम के लिए भी बरकात और फ़ज़लों का माध्यम हो सकती हैं परन्तु अपने पिता से आगे बढ़ने की कोशिश नेक बातों में होनी चाहिए। यह नहीं कि चोर का बच्चा यह कोशिश करे कि बाप से बढ़कर चोर हो बल्कि यह अर्थ है कि नमाज़ी आदमी की औलाद कोशिश करे कि बाप से बढ़कर नमाज़ी हो।

(उद्धरित ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 3 पृष्ठ 484-485)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की बचपन की सेहत की हालत का एक वाक़िया पहले वर्णन हो चुका है। आप अलैहिस्सलाम की सेहत की हालत और इलमी हालत का एक और वाक़िया है। दरअसल यह भी हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आप अलैहिस्सलाम से मुहब्बत और शफ़क़त का वाक़िया है जो यह भी साबित करता है कि

आप इस यक़ीन पर क़ायम थे कि यह बच्चा मुस्लेह मौऊद होने वाला है।

बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद इस वाक़िया के बारे में फ़रमाते हैं कि मेरी तालीम के सिलसिला में मुझ पर सबसे ज़्यादा एहसान हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु का है। आप चूँकि चिकित्सक भी थे और इस बात को जानते थे कि मेरी सेहत इस योग्य नहीं कि मैं किताब की तरफ़ ज़्यादा देर तक देख सकूँ। इस लिए आपका तरीक़ था कि आप अलैहिस्सलाम मुझे अपने पास बिठा लेते और फ़रमाते मियां मैं पढ़ता जाता हूँ तुम सुनते जाओ। फिर आप अपनी सेहत की हालत वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि इस की वजह यह थी कि बचपन में मेरी आँखों में कुकरे पड़ गए थे। पहले भी आँखों के बारे में वर्णन हो चुका है। और नियमित तीन चार साल तक मेरी आँखें दुखती रहीं और ऐसी शदीद तकलीफ़ कुकरों की वजह से पैदा हो गई कि डाक्टरों ने कहा कि इस की बीनाई ज़ाए हो जाएगी। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेरी सेहत के लिए खासतौर पर दुआएं करनी शुरू कर दीं और साथ ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेरे लिए रोज़े रखने शुरू कर दिए। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मुझे उस वक़्त याद नहीं कि आप ने कितने रोज़े रखे। बहरहाल तीन या सात रोज़े आप ने रखे। जब आख़िरी रोज़े की इफ़तारी करने लगे और रोज़ा खोलने के लिए मुँह में कोई चीज़ डाली तो यकदम मैं ने आँखें खोल दीं और मैं ने आवाज़ दी कि मुझे नज़र आने लग गया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जब इफ़तारी करने लगे थे तो उस वक़्त हज़रत मुस्लेह मौऊद ने कहा मैं ने आँखें खोलीं और मैंने आँखें खोल के कहा मुझे नज़र आने लग गया है। लेकिन इस बीमारी की शिद्दत और इस के नियमित हमलों का नतीजा यह हुआ कि मेरी एक आँख की रौशनी मारी गई। इस की तफ़सील आप अलैहिस्सलाम वर्णन करते हैं कि इस लिए मेरी बाई आँख में देखने की शक्ति नहीं है। मैं रस्ता तो देख सकता हूँ परन्तु इससे किताब नहीं पढ़ सकता। दो-चार फुट पर अगर कोई ऐसा आदमी बैठा हो जो मेरा जाना-पहचाना हुआ हो तो मैं उस को देखकर पहचान सकता हूँ लेकिन अगर कोई बे पहचाना बैठा हो तो मुझे उसकी शक्ल नज़र नहीं आ सकती। केवल दाई आँख काम करती है परन्तु इस में भी कुकरे पड़ गए और वह ऐसे शदीद हो गए कि कई कई रातें में जाग कर काटा करता था।

तो यह सेहत की हालत है और फिर देखें आप अलैहिस्सलाम के इलमी काम। किस तरह ख़ुदा तआला की सहायता ने आप अलैहिस्सलाम को नवाज़ा।

बहरहाल आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेरे उस्तादों से कह दिया था कि पढ़ाई उसकी मर्ज़ी पर होगी। यह जितना पढ़ना चाहे पढ़े और अगर न पढ़े तो इस पर ज़ोर न दिया जाए क्योंकि उसकी सेहत इस योग्य नहीं कि यह पढ़ाई का बोझ बर्दाश्त कर सके। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बार हा मुझे केवल यही फ़रमाते थे कि तुम क़ुरआन का अनुवाद और बुख़ारी हज़रत मौलवी-साहब से पढ़ लो अर्थात हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु से पढ़ लो। इस के अतिरिक्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भी फ़रमाया था कि कुछ चिकित्सा भी पढ़ लो क्योंकि यह हमारा ख़ानदानी फ़न है।

बहरहाल आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं उद्देश्य इस रंग में मेरी तालीम हुई और मैं दरहक़ीक़त विवश भी था क्योंकि बचपन में इलावा आँखों की तकलीफ़ के मुझे जिगर की ख़राबी का भी रोग था। बेशुमार बीमारियां थीं। छः छः महीने मूंग की दाल का पानी या साग का पानी मुझे दिया जाता रहा। फिर इसके साथ तिल्ली भी बढ़ गई थी। रैड आइयो डाईड आफ़ मरकरी (mercury) की तली के मुक़ाम पर मालिश की जाती थी। ईसी तरह गले पर इस की मालिश की जाती क्योंकि मुझे एक गले का रोग की भी शिकायत थी। उद्देश्य आँखों में कुकरे, जिगर की ख़राबी, अज़म तहाल (तिल्ली की बीमारी, तिल्ली का सूजन संबंधी रोग जिसमें कमज़ोरी के कारण शरीर पीले रंग से ढक जाता है।) की शिकायत फिर इस के साथ बुख़ार का शुरू होना जो छः छः महीने तक नहीं उतरता और मेरी पढ़ाई के सम्बन्ध में बुज़ुर्गों का निर्णय कर देना कि यह जितना पढ़ना चाहे पढ़ ले इस पर ज़्यादा ज़ोर नहीं दिया जाए। इन हालात से हर शख़्स अनुमान लगा सकता है कि मेरी तालीमी क़ाबिलीयत का क्या हाल होगा।

एक दफ़ा हमारे नाना-जान हज़रत मीर नासिर नवाब साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरी उर्दू की परीक्षा ली।

फ़रमाया कि अब भी मेरा ख़त अच्छा नहीं है परन्तु उस ज़माना में मेरा इतना ख़राब था कि पढ़ा ही नहीं जाता थाकि मैंने क्या लिखा है। उन्होंने बड़ी कोशिश की कि पता लगाऐं मैंने क्या लिखा है परन्तु उन्हें कुछ पता नहीं चला। मीर साहिब की तबीयत में बड़ी तेज़ी थी। ग़ुस्सा मैं फ़ौरन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास पहुंचे। मैं भी संयोग से उस वक़्त घर में ही था। हम तो पहले ही उनकी तबीयत से डरा करते थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं नाना थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास शिकायत लेकर पहुंचे तो और भी डर पैदा हुआ कि अब न मालूम क्या हो। ख़ैर मीर साहिब आ गए और हज़रत साहब से कहने लगे कि महमूद की तालीम की तरफ़ आप को ज़रा भी तवज्जा नहीं है। मैंने उसका उर्दू का इमतिहान लिया था। आप ज़रा पर्चा तो देखें उसका इतना बुरा ख़त है कि कोई भी यह ख़त नहीं पढ़ सकता। फिर ईसी जोश की हालत में वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कहने लगे आप बिल्कुल पर्वा नहीं करते और लड़के की आयु बर्बाद हो रही है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब मीर साहिब को इस तरह जोश की हालत में देखा तो फ़रमाया बुलाओ मौलवी-साहब को। जब आपको कोई मुश्किल दरपेश आती तो आप हमेशा हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु को बुला लिया करते थे। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल को मुझसे बड़ी मुहब्बत थी। आप तशरीफ़ लाए और हसब-ए-मामूल सिर नीचे डाल कर एक तरफ़ खड़े हो गए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मौलवी-साहब मैंने आपको इस उद्देश्य के लिए बुलाया है कि मीर साहिब कहते हैं कि महमूद का लिखा हुआ पढ़ा नहीं जाता। मेरा जी चाहता है कि इस की परीक्षा ले ली जाए। यह कहते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़लम उठाई और दो तीन सतर में एक इबारत लिख कर मुझे दी और फ़रमाया इस को नक़ल करो। बस यह परीक्षा थी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ली। मैंने बड़ी एहतियात से और बहुत सोच समझ कर उस को नक़ल कर दिया। अव्वल तो वह इबारत कोई ज़्यादा लंबी नहीं थी। दूसरे मैंने केवल नक़ल करना था और नक़ल करने में तो और भी आसानी होती है क्योंकि असल चीज़ सामने होती है और फिर मैं ने आहिस्ता-आहिस्ता नक़ल किया। अलिफ़ और बा इत्यादि एहतियात से डाले। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस को देखा तो फ़रमाने लगे मुझे तो मीर साहिब की बात से बड़ी चिंता पैदा हो गई थी परन्तु उस का ख़त तो मेरे ख़त के साथ मिलता-जुलता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल तो पहले ही मेरे हक़ में थे और मेरे समर्थन में उधार खाए बैठे थे। फ़रमाने लगे कि हुज़ूर मीर साहिब को यूंही जोश आ गया अन्यथा उस का ख़त तो बड़ा अच्छा है। तो ये हालात थे मेरे। कहते हैं ऐसे हालात में देख लो कि मैंने ज़ाहिरी इलम क्या हासिल करना था।

फिर अपनी तालीमी क़ाबिलियत के बारे में एक अवसर पर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

कि हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे फ़रमाया करते थे कि मियां तुम्हारी सेहत ऐसी नहीं कि तुम ख़ुद पढ़ सको। मेरे पास आ जाया करो। मैं पढ़ता जाऊँगा और

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

तुम सुनते रहा करो। इस लिए उन्होंने ज़ोर दे देकर पहले क़ुरआन पढ़ाया फिर बुख़ारी पढ़ा दी। ये नहीं कि आप अलैहिस्सलाम ने आहिस्ता-आहिस्ता मुझे क़ुरआन पढ़ाया बल्कि आप अलैहिस्सलाम का तरीक़ यह था कि आप क़ुरआन पढ़ते जाते और साथ साथ उस का अनुवाद करते जाते। कोई बात ज़रूरी समझते तो बता देते अन्यथा जल्दी जल्दी पढ़ाते जाते। आप अलैहिस्सलाम ने तीन महीना में मुझे सारा क़ुरआन पढ़ा दिया। इस के बाद फिर कुछ छुट्टियाँ होने लग गई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद आप अलैहिस्सलाम ने फिर मुझे कहा कि मियां मुझसे बुख़ारी तो पूरी पढ़ लो। फ़रमाते हैं कि दरअसल मैंने आप अलैहिस्सलाम को बता दिया था अर्थात ख़लीफ़ा अव्वल को बता दिया था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मुझे फ़रमाया करते थे कि मौलवी-साहब से क़ुरआन और बुख़ारी पढ़ लो। इस लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी में ही में ने आप अलैहिस्सलाम से क़ुरआन और बुख़ारी पढ़नी शुरू कर दी थी जबकि नागे होते रहे। ईसी तरह चिक्तिसा भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हिदायत के अधीन मैंने आप अलैहिस्सलाम से शुरू कर दी थी।

बहरहाल फ़रमाते हैं कि उद्देश्य मैं ने आप अलैहिस्सलाम से चिकित्सा भी पढ़ी और क़ुरआन-ए-करीम की तफ़सीर भी। क़ुरआन-ए-करीम की तफ़सीर आप अलैहिस्सलाम ने दो महीने में ख़त्म करा दी। आप अलैहिस्सलाम मुझे अपने पास बिठा लेते और कभी नसफ़ और कभी पूरा पूरा पारा अनुवाद के साथ पढ़ कर सुना देते। किसी किसी आयत की तफ़सीर भी कर देते। ईसी तरह बुख़ारी आप अलैहिस्सलाम ने दो तीन महीने में मुझे ख़त्म करा दी। एक दफ़ा रमज़ान के महीना में आप अलैहिस्सलाम ने सारे क़ुरआन का दरस दिया तो इस में भी मैं शरीक हो गया। चंद अरबी के पत्रिका भी मुझे आप अलैहिस्सलाम से पढ़ने का संयोग हुआ। उद्देश्य यह मेरी इलमीयत थी।

(उद्धरित अल् मौउद, अनवारुल उलूम भाग 17 पृष्ठ 532 से 537)

अपनी पहली तक़रीर और इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु की पसंदीदगी का इज़हार

इसके बारे में वर्णन फ़रमाते हैं कि हमारे एक उस्ताद थे मैंने उनको देखा है कि जब मैं दरस देता तो वह बाक़ायदा मेरे दरस में शामिल होते थे लेकिन इस के मुक़ाबले में मेरे एक और उस्ताद थे। जब कभी वह दरस दे रहे होते तो पहले साहिब मस्जिद में आकर उन्हें दरस देते हुए देखते तो चले जाते और कहते कि उसकी बातें क्या सुननी हैं ये तो सुनी हुई हैं। परन्तु मेरे दरस में बावजूद इस के कि मैं उनका शागिर्द था इस कारण से कि मुझ पर सुधारणा रखते थे ज़रूर शामिल होते और फ़रमाया करते थे कि मैं इस के दरस में इसलिए शामिल होता हूँ कि इस के माध्यम से क़ुरआन-ए-करीम के कुछ नए अर्थ मुझे मालूम होते हैं। यह अल्लाह तआला का फ़ज़ल होता है कि कुछ लोगों पर छोटी उम्र में ही ऐसे उलूम खोल दिए जाते हैं जो दूसरों की कल्पना में भी नहीं होते। वास्तव में बात तो यह थी कि अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम को मुस्लेह मौऊद का मिस्दाक़ बनाना था इसलिए ख़ुद ही तालीम भी दे रहा था। बहरहाल आप फ़रमाते हैं कि इसी मस्जिद में ग़ालिबन मस्जिद अक्सा की बात है 1907 ई. में सबसे पहली दफ़ा मैंने पब्लिक तक़रीर की। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी का, वफ़ात से एक वर्ष पहले की घटना है। जलसे का अवसर था। बहुत से लोग जमा थे। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु भी मौजूद थे। मैंने सूरत लुक़्मान का दूसरा रूकू पढ़ा और फिर उसकी तफ़सीर वर्णन की। मेरी अपनी हालत उस वक़्त यह थी कि जब मैं खड़ा हुआ तो चूँकि इस से पहले मैंने पब्लिक में कभी लैक्चर नहीं दिया था और मेरी उम्र भी इस वक़्त केवल अठारह वर्ष की थी। फिर उस वक़्त हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु भी मौजूद थे और अंजुमन के मैंबरान भी थे और बहुत से और मित्र भी आए हुए थे इसलिए मेरी आँखों के आगे अंधेरा छा गया। उस वक़्त मुझे कुछ मालूम नहीं था कि मेरे सामने कौन बैठा है और कौन नहीं। तक़रीर आध घंटा या पोन घंटा जारी रही। जब मैं तक़रीर ख़त्म कर के बैठा तो मुझे याद है हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने खड़े हो कर फ़रमाया। मियां मैं तुमको मुबारकबाद देता हूँ कि तुमने ऐसी आला तक़रीर की। मैं तुम्हें ख़ुश करने के लिए नहीं कह रहा। मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूँ कि वाक़ई अच्छी थी।

(उद्धरित ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 22 पृष्ठ 472-473)

अत: अल्लाह तआला ने आपको उलूम से ऐसा परिपूर्ण किया कि आपकी बावन साला ज़िंदगी इस पर गवाह है कि चाहे वे दीनी मज़ामीन का प्रश्न हो या किसी दुनियावी मज़मून का, जब भी आपको किसी मौज़ू पर लिखने और बोलने को कहा गया आपने इलम-ओ-इर्फ़ान के दरिया बहा दिए।

बेशुमार अवसरों पर आपकी तक़ारीर को ग़ैरों ने भी बेहद सराहा और यह भी रिकार्ड में मौजूद है और बरमला पब्लिक के सामने उनकी तारीफ़ की। अख़बारों ने भी ख़बरें जमाई और इस बात से वाज़िह होता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी बड़ी शान से पूरी हुई। बहरहाल आपका लिटरेचर और ख़ुतबात एक क़ीमती ख़ज़ाना हैं हज़ारों पृष्ठों में शायद लाख के क़रीब पृष्ठ होंगे। अब अंग्रेज़ी में भी और दूसरी भाषाओँ में भी यह अनुवाद हो रहा है। हमारा भी काम है कि इस से लाभ प्राप्त करें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु अपने आपको मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी का मिस्दाक़ ठहराते हुए फ़रमाते हैं कि "अल्लाह तआला के फ़ज़ल और इस के रहम से वे भविष्यवाणी जिसके पूरा होने का एक लंबे अरसा से इंतिज़ार किया जा रहा था अल्लाह तआला ने इस के सम्बन्ध में अपने इल्हाम और ध्वज के द्वारा से मुझे बता दिया है कि वे भविष्यवाणी मेरे वजूद में पूरी हो चुकी है।

और अब इस्लाम के दुश्मनों पर ख़ुदा तआला ने कामिल हुज्जत कर दी है और उन पर यह अमर वाज़िह कर दिया है कि इस्लाम ख़ुदा तआला का सच्चा धर्म, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा तआला के सच्चे रसूल और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला के सच्चे भेजे हुए हैं। झूठों हैं वे लोग जो इस्लाम को झूठा कहते हैं। काज़िब हैं वे लोग जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को काज़िब कहते हैं। ख़ुदा ने इस महान भविष्यवाणी के द्वारा इस्लाम और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सदाक़त का एक ज़िंदा सबूत लोगों के सामने पेश कर दिया है।

भला किस व्यक्ति की ताक़त थी कि वह 1886 में आज से पूरे अट्ठावन वर्ष पूर्व जब आप वर्णन कर रहे हैं उस वक़्त अट्ठावन वर्ष हो चुके थे अपनी तरफ़ से यह ख़बर दे सकते कि उसके पास नौ वर्ष के अरसा में एक लड़का पैदा होगा। वह जल्द जलद बढ़ेगा। वह दुनिया के किनारों तक शौहरत पाएगा, वह इस्लाम और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नाम दुनिया में फैलाएगा, वह उलूम-ए-ज़ाहिरी और बातिनी से परिपूर्ण किया जाएगा, वह जलाल-ए-इलाही के ज़हूर का मोजिब होगा और ख़ुदा तआला की क़ुदरत और उसकी क़ुरबत और उसकी रहमत का वह एक ज़िंदा निशान होगा। यह ख़बर दुनिया का कोई इन्सान अपने पास से नहीं दे सकता था। ख़ुदा ने यह ख़बर दी और फिर उसी ख़ुदा ने इस ख़बर को पूरा किया। इस इन्सान के द्वारा जिसके सम्बन्ध में डाक्टर यह उम्मीद नहीं।" उस इन्सान के द्वारा उसको पूरा किया जिसके सम्बन्ध में डाक्टर ये उम्मीद नहीं "रखते थे कि वह ज़िंदा रहेगा या लंबी उम्र पाएगा।"

फिर अपनी सेहत के बारे में बताया है कि "मेरी सेहत बचपन में ऐसी ख़राब थी कि एक अवसर पर डाक्टर मिर्ज़ा याक़ूब बेग़ साहिब ने मेरे सम्बन्ध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कह दिया कि उसे सिल (T.B) हो गया है किसी पहाड़ी मुक़ाम पर उसे भिजवा दिया जाए।" टी. बी की वजह से। "इस लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे शिमला भिजवा दिया परन्तु वहां जा कर में उदास हो गया और इस वजह से जल्दी ही वापस आ गया।" फ़रमाया कि "ग़रज़ ऐसा इन्सान जिसकी सेहत कभी एक दिन भी अच्छी नहीं हुई इस इन्सान को ख़ुदा ने ज़िंदा रखा और इस लिए ज़िंदा रखा कि इस के द्वारा अपनी पेशगोइयों को पूरा करे और इस्लाम और अहमदियत की सदाक़त का सबूत लोगों के सामने प्रदान करे। फिर में वह शख़्स था जिसे उलूम-ए-

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ज़ाहिरी में से कोई इलम हासिल नहीं था परन्तु ख़ुदा ने अपने फ़ज़ल से फ़रिश्तों को मेरी तालीम के लिए भिजवाया और मुझे क़ुरआन के इन अर्थों से अवगत फ़रमाया जो किसी इन्सान की कल्पना में भी नहीं आ सकते थे। वे इलम जो ख़ुदा ने मुझे अता फ़रमाया, वह चशमा रुहानी जो मेरे सीने में फूटा वह काल्पनिक नहीं है बल्कि ऐसा स्पष्ट और विश्वसनीय है कि

मैं सारी दुनिया को चैलेंज करता हूँ कि अगर इस दुनिया के पर्दा पर कोई व्यक्ति ऐसा है जो यह दावा करता हो कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से उसे क़ुरआन सिखाया गया है तो मैं हर वक़त उस से मुक़ाबला करने के लिए तैयार हूँ।"

लेकिन कोई नहीं आया मुक़ाबला पर। "लेकिन मैं जानता हूँ आज दुनिया के पर्दा पर सिवाए मेरे और कोई व्यक्ति नहीं जिसे ख़ुदा की तरफ़ से क़ुरआन-ए-क्रीम का इलम अता फ़रमाया गया हो।

ख़ुदा ने मुझे क़ुरआन का ज्ञान प्रदान किया है और इस ज़माना में उस ने क़ुरआन सिखाने के लिए मुझे दुनिया का उस्ताद निर्धारित किया है। ख़ुदा ने मुझे इस उद्देश्य के लिए खड़ा किया है कि मैं मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और क़ुरआन-ए-करीम के नाम को दुनिया के किनारों तक पहुंचाऊं और इस्लाम के मुक़ाबले में दुनिया के समस्त झूठे अदयान को हमेशा की शिकस्त दे दूं।"

और आप अलैहिस्सलाम ने इस काम को किया। आप अलैहिस्सलाम के ज़माने में बेशुमार अनुवाद क़ुरआन-ए-करीम के प्रकाशित हुए। बेशुमार तो नहीं काफ़ी हद तक शाय हुए और फिर उसी काम को अब तक आगे बढ़ाया जा रहा है। आप अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी में सतरह अठारह भाषाओँ में अनुवाद हो गए थे । इसी तरह इस्लाम की तब्लीग़ दुनिया के किनारों तक आप अलैहिस्सलाम के ज़माने में पहुंची।

फ़रमाया कि "दुनिया ज़ोर लगा ले वह अपनी समस्त ताक़तों और जमईयतों को इकट्ठा कर ले। ईसाई बादशाह भी और उनकी हुकूमतें भी मिल जाएं। यूरोप भी और अमरीका भी इकट्ठा हो जाए, दुनिया की समस्त बड़ी बड़ी मालदार और ताक़तवर कौमें इकट्ठी हो जाएं और वे मुझे इस उद्देश्य में नाकाम करने के लिए मुत्तहिद हो जाएं फिर भी मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ कि वह मेरे मुक़ाबला में नाकाम रहेंगी और ख़ुदा मेरी दुआओं और तदाबीर के सामने उनके समस्त मन्सूबों और मकरों और फ़रेबों को मालिया-मेट कर देगा और ख़ुदा मेरे द्वारा से या मेरे शागिर्दों और इत्तिबा के द्वारा से इस भविष्यवाणी की सदाक़त साबित करने के लिए रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नाम के तुफ़ैल और इस्लाम के सदके इज़्ज़त को क़ायम करेगा और इस वक़्त तक दुनिया को नहीं छोड़ेगा जब तक इस्लाम फिर अपनी पूरी शान के साथ दुनिया में क़ायम न हो जाए और जब तक मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को फिर दुनिया का ज़िंदा नबी स्वीकार न कर लिया जाए।"

(अल् मौउद, अनवारुल उलूम भाग 17 पृष्ठ 613-614)

अत: यह भविष्यवाणी तो पूरी हुई। आप अलैहिस्सलाम ने अपना दौर भी गुज़ारा लेकिन भविष्यवाणी के जो शब्द हैं यह इस वक़्त तक क़ायम हैं और यह इन शा अल्लाह उस वक़्त तक क़ायम रहेंगे और यह चलती चली जाएगी जब तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मिशन पूरा न हो जाए और इस्लाम का झंडा समस्त दुनिया में न लहराने लग जाए। अत: हमें याद रखना चाहिए कि इस भविष्यवाणी पर हमारे जलसे और उस को याद रखना तभी फ़ायदामंद है जब हम इस उद्देश्य को हमेशा सामने रखें कि हमने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त और वक़ार को दुनिया में क़ायम करना है और दुनिया पर इस्लाम की सच्चाई ज़ाहिर कर के सबको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के झंडे तले लेकर आना है। आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों के सिवा और कोई नहीं जिसके द्वारा से इस्लाम का झंडा दुनिया में दुबारा लहराए और दुनिया में इस्लाम फैले। अल्लाह तआला हमें इस काम के करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। (अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 11 मार्च 2022 पृष्ठ 5 से 9

★★★

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 12 का शेष

(ज़मीमा तारीख़-ए-अहमदियत भाग 8 पृष्ठ 11)

बहरहाल ख़ुशी मुहम्मद शाकिर साहिब का जहां तक वर्णन है। 1969 ई. में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। फिर ज़िंदगी वक़्फ़ की। जामिआ अहमदिया में दाख़िल हुए। 1977 ई. में जामिआ से शाहिद की डिग्री हासिल की। 1978 ई. में अरबी फ़ाज़िल का इमतिहान पास किया। फिर जमाअती ख़िदमात करते रहे। साथ ही उन्होंने 1987 ई. में एम.ए. इस्लामियात की डिग्री भी हासिल की और पाकिस्तान के इलावा के मुख़्तलिफ़ शहरों कैगनी कनाकरी में बतौर मुबल्लिग़ सिलसिला उन्होंने ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। वहां फ्रैंच भाषा में डिप्लोमा भी उन्होंने हासिल किया। अल्लाह तआला ने उनको छ: बेटों से नवाज़ा। उनके एक बेटे नासिर इस्लाम साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं। रब्वाह में ही उस वक़्त चयन हैं। 77 ई. से 91 ई. तक पाकिस्तान के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और 91ई. से 2007 ई. तक सीरालियून और गिनी कनाकरी में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। वहां से वापस आए तो 2008 ई. से अंजुमन के दफ़ातिर के मुख़्तलिफ़ विभागों में काम करने की तौफ़ीक़ मिली। ऐडीशनल नज़ारत इस्लाह-ओ-इरशाद मुक़ामी और नज़ारत उमूर-ए-आमा में ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। यह अफ़्रीक़ा में जब थे तो उनके माध्यम से कई सईद रूहों को अहमदियत में दाख़िल होने की तौफ़ीक़ मिली। कई जमाअतें क़ायम हुईं। बड़े बेनफ़्स और मेहनत करने वाले मुबल्लिग़ थे। उनके तब्लीग़ के मैदान के बड़े ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात भी हैं जो मुख़्तलिफ़ लोगों ने वर्णन किए हैं कि किस तरह अल्लाह तआला उनकी मदद फ़रमाता था। उनको जुलाई 1986 ई. में कलिमा तय्यबा के केस में जेल में रहने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ।

उनकी पत्नी लिखती हैं कि मेरी सारी ज़िंदगी इस बात की गवाह है कि उन्होंने आज तक न नमाज़ छोड़ी और न ही कभी तहज्जुद। जमाअती दौरे से वापस आते, थकावट के बावजूद भी नमाज़ लाज़िमी अदा करते, बाजमाअत अदा करने की कोशिश करते। शदीद बीमारी के बावजूद यहां तक कि चलना मुश्किल होता परन्तु बाजमाअत नमाज़ के लिए लाज़िमी जाते। बेशुमार ख़ूबियों के मालिक थे। हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद की अदायगी में हमा-तन व्यस्त थे। तक़्वा की बारीक राहों पर चलने वाले, ख़िलाफ़त से अत्यधिक इशक़, इताअत गुज़ार, आजिज़ी इन्केसारी, जमाती ओहदेदारान का सम्मान, बच्चों से प्रेम, नर्मी, मित्रों और रिश्तेदारों का ख्याल, मिलनसार, तब्लीग़ का ख़ास शौक़ रखने वाले थे। बिमारी के आख़िरी दिनों में भी जब तबीयत ज़्यादा ख़राब हो गई तो तीन दिन तीन रात तक उनको एमरजैंसी में ले जाया जाता रहा। जब भी वापस घर आते तो फिर भी आ के घर में तहज्जुद की नमाज़ कभी नहीं छोड़ते थे और एक दिन तो हस्पताल से आए बीमार तबीयत थी, फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी और फिर तैयार हो कर दफ़्तर भी चले गए। बहरहाल जब उनको रोका जाता था तो कहते यही एक वक़्फ़ ज़िंदगी का काम है और मेरे काम से मुझे न रोको।

उनके बेटे नासिर इस्लाम मुरब्बी सिलसिला हैं। कहते हैं जब से हमने होश सँभाला है पिता को तहज्जुद गुज़ार ही देखा है और इताअत के आला स्थान पर पाया है। कोई भी जमाअती ओहदेदार होता चाहे छोटा हो या बड़ा उसकी इताअत करते। रोज़ाना सदक़ा देना और ख़ैरात करना मामूल-ए-ज़िंदगी था। रोज़ का काम रोज़ करते। बहुत मिलनसार थे। तब्लीग़ का बे-इंतिहा शौक़ था। कहते हैं ख़ाकसार ने अपने पिता को नमाज़ पर जाते हुए, वापसी पर या सुबह की सैर पर सफ़र के दौरान अफ़्रीक़ा में या किसी होटल में बैठे हुए हैं तो वहां खाना खाते वक़्त या प्रतीक्षा करने वाले स्थान में, वेटिंग रुम में अगर कहीं बैठे हैं तो वहां प्रतीक्षा करते वक़्त पुलिस अफ़्सर हों या मिल्ट्री के अफ़्सर हों जिनको भी मिलते उनको तब्लीग़ करते और कोई अवसर हाथ से न जाने देते और कहीं कोई शख़्स नज़र आ जाता तो हम कहा करते थे अब यह आदमी हमारे अब्बा को नज़र आ गया है अब उनसे जान नहीं बचा सकता उस को तब्लीग़ कर के ही छोड़ेंगे।

फिर उनके एक बेटे कहते हैं कि पिता साहिब ने बताया कि अफ़्रीक़ा में तब्लीग़ के हवाले से काफ़ी कठिनाइयाँ सामने आ रही थीं। काफ़ी दुआएं कीं, तहज्जुद पढ़ी तो सज्दे में आवाज़ आई मेरी सरिशत में नाकामी का ख़मीर नहीं है।" कहते हैं उस के बाद अगले दिन जो रोक तब्लीग़ के हवाले से थी वह दूर हो गई। बहरहाल उनके बारे में बहुत से लोगों ने वाक़ियात लिखे हैं और हर एक ने यही लिखा है कि मिलनसार थे, विनम्र थे, दुआ करने वाले थे, ख़िलाफ़त से पक्का ताल्लुक़ था और अल्लाह तआला पर पूर्ण विश्वास करने वाले इन्सान थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

(अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 18 से 24 मार्च2022 पृष्ठ 5 से 10)

★★★

ख़ुत्बः जुमअः

"ख़ुदा की कसम अल्लाह तआला तुझ पर दो मौतें जमा नहीं करेगा। तेरी मौत से दुनिया को वे नुक़्सान पहुंचा है जो किसी नबी की मौत से नहीं पहुंचा था। तेरा अस्तित्व तेरी विशेषताओं से ऊपर है और तेरी शान वह है कि कोई मातम तेरी जुदाई के सदमे को कम नहीं कर सकता। अगर तेरी मौत का रोकना हमारी ताक़त में होता तो हम सब अपनी जानें देकर तेरी मौत को रोक देते।"

(हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की पवित्र प्रतिक्रिया)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताएं और गुण

अल्लाह और मुस्लमान ये बात नापसंद करते हैं कि अबू बकर के इलावा कोई और नमाज़ पढ़ाए (हदीस)

अल्लाह की क़सम ऐसा मालूम हुआ कि मानों लोग उस वक़्त तक कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वह आयत पढ़ी जानते ही न थे कि अल्लाह ने यह आयत नाज़िल भी की थी।

अमीर हम में होंगे और तुम वज़ीर। हर महत्वपूर्ण विषयों में तुमसे मश्वरा लिया जाएगाऔर तुम्हारे बग़ैर अहम मुआमलात के सम्बन्ध में निर्णय नहीं करेंगे। दुनिया के वर्तमान हालात में अहमदियों को दुआओं की तहरीक

ख़ुदा करे कि ये लोग ख़ुदा तआला को पहचानने वाले हो और अपनी दुनियावी ख़ाहिशात की तसकीन के लिए इन्सानों की जानों से ना खेलें

आदरणीय ख़ुशी मुहम्मद साहिब शाकिर मुरब्बी सिलसिला का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 25 फरवरी 2022 ई. **स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन हो रहा था इस में हज्जतुल विदा के अवसर पर इस तरह वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज्जतुल विदा के लिए दस हिज्री गुरूवार के दिन जबकि ज़ीकादा के छः दिन बाक़ी थे रवाना हुए। एक कथन के अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शनिवार के दिन रवाना हुए।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 361 बाब हज्जतुल विदा। दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

बहरहाल इस में एक रिवायत आती है कि हज़रत अस्मा पुत्री अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करती हैं कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज्जतुल विदा का इरादा फ़रमाया तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास एक ऊंट है हम इस पर अपना यात्रा का समाना लाद लेते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया ऐसा ही कर लो। इस लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो दोनों के सामान के लिए एक ही ऊंट था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुछ आटे और कुछ सत्तू का यात्रा का समाना बनवाया और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ऊंट पर रख दिया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे अपने ग़ुलाम के सपुर्द कर दिया।

हज़रत अस्मा-ए-पुत्री अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करती हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज के लिए निकले। जब हम अर्ज स्थान पर थे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सवारी से उतरे और हम भी उतरे तो आयशा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एक पहलू में बैठ गईं और मैं अपने पिता के पहलू में बैठ गई। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का सामान इकट्ठा एक ऊंट पर था जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ग़ुलाम के पास था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो प्रतीक्षा करने लगे कि वह आ जाए। वह ग़ुलाम आ गया परन्तु उस का ऊंट उस के साथ नहीं था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा तुम्हारा ऊंट कहाँ है। उसने कहा पिछली रात से में उसे गुम कर चुका हूँ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि एक ही ऊंट था वह भी तुमने गुम कर दिया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उसे मारने के लिए उठे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुस्कुरा रहे थे और फ़रमाने लगे इस मोहरिम को देखो यह क्या कर रहा है? इब्न-ए-अबी रिज़मा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस से अधिक नहीं कहा कि इस मोहरिम को देखो क्या करने लगा है और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्कुराने लगे।

(उद्धरित सब्लुल हुदा वर्रिशाद भाग 7 पृष्ठ12-13 فی حسن خلقهﷺ. दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

(उद्धरित सुंन अबू दाऊद किताब मनासिक बाब المحرم یؤدب غلامه गुलामा हदीस 1818)

बहरहाल जब कुछ सहाबा को मालूम हुआ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यात्रा का समाना गुम हो गया है तो वे हीस लेकर आए। हीस एक उम्दा हलवा है जो खजूर और आटे और मक्खन से तैयार किया जाता है, और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने रख दिया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जो अपने ग़ुलाम पर ग़ुस्सा कर रहे थे उनसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हे अबू बकर नरमी इख़तियार करो। यह मामला न तुम्हारे नियंत्रण में है और न हमारे। इस ग़ुलाम की कोशिश तो निसंदेह यही रही होगी कि ऊंट गम न हो लेकिन गुम हो गया। बहरहाल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह लो, यह हमारे लिए एक पवित्र आहार आ गया है जो अल्लाह तआला ने भेजा है और इस ग़ुलाम के साथ हमारा जो खाना था यह उसका बदल है। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी वह खाना खाया और उन लोगों ने भी खाया जो उन दोनों के साथ खाया करते थे यहां तक कि सब का पेट भर गया। इस के बाद हज़रत सफवान बिन मुअत्तल रज़ियल्लाहु अन्हु पहुंचे। उनकी ज़िम्मेदारी क़ाफ़िले के पीछे चलने की थी। उनके सपुर्द यही काम था जैसा कि इफ़क के वाक़िया में भी वर्णन हो चुका है कि पीछे से देखते थे कोई चीज़ रह तो नहीं गई। हज़रत सफवान आए तो ऊंट उनके साथ था और इस पर यात्रा का समाना भी मौजूद था। उन्होंने ऊंट को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पड़ाव के दरवाज़े पर ला कर बिठाया। तब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अबू बकर से फ़रमाया। देखो तुम्हारे सामान में से कुछ गुम तो नहीं हुआ? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया सिवाए एक प्याले के जिसमें हम पानी पिया करते थे कोई चीज़ गुम नहीं हुई। उसी वक़्त ग़ुलाम ने कहा कि वह पयाला मेरे पास पहले ही मौजूद है।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 365 बाब हज्जतुल विदा। दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 110 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई.)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज्जतुल विदा के अवसर पर आप अलैहिस्सलाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज के लिए निकले और आप अलैहिस्सलाम के साथ आप अलैहिस्सलाम की पत्नी अस्मा बिंत उमेस रज़ियल्लाहु अन्हा भी थीं। अतः जब वे लोगज़ुल हलीफ़ा में पहुंचे तो वहां अस्मा के हाँ मुहम्मद बिन अबू बकर का जन्म हुआ। ज़ुल हुलेफ़ा मदीना से छः सात मील दूरी पर एक स्थान है। बहरहाल हज़रत अबू बकर नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस बात की ख़बर दी कि इस तरह जन्म हुआ है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आप अलैहिस्सलाम को इरशाद फ़रमाया कि अस्मा को कहें कि ग़ुसल कर लें। फिर हज का एहराम बांध लें और सब काम करें जो दूसरे लोग अर्थात हाजी करते हैं सिवाए इस के कि वह बैतुल्लाह का तवाफ़ न करें।

(सुंन अल् निसाई किताब मनासिक हज बाब الغسل للإهلال हदीस 2664)

(मोअज्मुल बुल्दान भाग 2 पृष्ठ 339 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जब वादी उस्फ़ान से गुज़रे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने प्रश्न किया हे अबू बकर यह कौन सी वादी है? अबू

बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया यह वाद उस्फ़ान है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

यहां से हज़रत हूद अलैहिस्सलाम और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम दो सुर्ख़ (लाल) ऊंटों पर सवार जिनकी महार खजूर की छाल की थी चोग़ा पहने हुए और ऊपर सफ़ैद और काली नक़्शदार चादर ओढ़े हुए तलबीह कहते हुए बैतुल अतीक़ के हज के लिए गुज़रे थे।

(सब्लुल हुदा वर्रिशाद भाग 8 पृष्ठ 461 فی سیاق حجۃ الوداع. दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

हज्जतुल विदा के सफ़र में जिन लोगों के साथ क़ुर्बानी के जानवर थे उन में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो भी शामिल थे।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 369 बाब हज्जतुल विदा। दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैंने हज्जतुल विदा में देखा कि सुहेल बिन अम्र ज़िबह करने की जगह पर खड़े हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़ुर्बानी के जानवर को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़रीब कर रहे हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने हाथ से उसको ज़िबह किया। फिर सिर मूंडने वाले को बुलाया और अपने बाल मुंडवाए। कहते हैं कि

मैंने सुहेल को देखा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाल मुबारक अपनी आँखों से लगा रहा था। कहते हैं उस वक़्त मुझे याद आ गया कि यही सुहेल सुलह हुदैबिया के वक़्त आपको बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम लिखने से रोक रहा था जो समझोते पर लिखी जानी थी।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने अल्लाह तआला की प्रशंसा वर्णन की जिसने सुहेल को इस्लाम की तरफ़ हिदायत दी। (सब्लुल हुदाई वर्रिशाद भाग 5 पृष्ठ 64 फ़ी ग़ज़वा अल् हुदयबिया। दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.) और फिर जब हिदायत दी तो फिर इख़लास और वफ़ा में बे-इंतिहा बढ़े।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आख़िरी बीमारी के दौरान हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़ें पढ़ाने के बारे में आता है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी बीमारी में फ़रमाया अबू बकर से कहो कि वे लोगों को नमाज़ें पढ़ाऐं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा मैंने अर्ज़ किया हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जगह खड़े होंगे तो वह रोने की वजह से लोगों को सुना नहीं सकेंगे। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को कहें कि वे लोगों को नमाज़ें पढ़ाऐं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती थीं मैं ने फिर हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से आप रज़ियल्लाहु अन्हो कहें कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जगह खड़े होंगे तो रोने की वजह से लोगों को सुना नहीं सकेंगे। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहें कि वे लोगों को नमाज़ पढ़ा दें। हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने ऐसा ही किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नाराज़ हुए कि ख़ामोश रहो। तुम तो यूसुफ़ वाली औरतें हो। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहो वही लोगों को नमाज़ पढ़ाऐं।

(सही अल् बुख़ारी किताब کتاب الاذان، باب اھل العلم و الفضل احق بالامانۃ، हदीस 679)

वफ़ात से पूर्व जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बीमार थे तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ग़ैरमौजूदगी में हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को नमाज़ पढ़ाने के लिए कह दिया। जब हुजरे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आवाज़ पहुंची तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहां हैं? अल्लाह और मुस्लमान ये बात नापसंद करते हैं कि अबू बकर के इलावा कोई और नमाज़ पढ़ाए।

फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलाया गया तो वह उस वक़्त पहुंचे जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ पढ़ा चुके थे। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बीमारी के दौरान और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात तक हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ही नमाज़ पढ़ाते रहे।

(उद्धरित الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، भाग 3 पृष्ठ 97-96 حرف العین, मक्तबा दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2002 ई.)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी बीमारी में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कि वे लोगों को नमाज़ पढ़ाऐं। इसलिए वे उन्हें नमाज़ पढ़ाया करते थे। उर्वा कहते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी बीमारी में कुछ तख़फ़ीफ़ महसूस की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाहर मस्जिद में तशरीफ़ लाए। क्या देखते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आगे खड़े हो कर लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे हैं। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा तो पीछे हटे। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें इशारा किया कि अपनी जगह पर ही रहें और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के बराबर उनके पहलू में बैठ गए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नमाज़ के साथ नमाज़ पढ़ते और लोग हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की नमाज़ के साथ नमाज़ पढ़ते।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल्इज़न باب من قام الی جنب الامام لعلۃ ... हदीस 683)

यह बुख़ारी की रिवायत है। सही बुख़ारी में ही एक और रिवायत इस तरह है। हज़रत अनस बिन मालिक अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत अबू बकर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस बीमारी में जिसमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हो गई लोगों को नमाज़ पढ़ाया करते थे यहां तक कि जब पीर का दिन हुआ और वे नमाज़ में सफ़ों में थे तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हुजरे का पर्दा उठाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमें देख रहे थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हुए थे। मानो कि

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पवित्र मुख क़ुरआन-ए-मजीद का पृष्ठ था।

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुश हो कर तबस्सुम फ़रमाया और हमें ख़्याल हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखने की वजह से हम ख़ुशी से आज़माईश में पड़ जाऐंगे। इतने में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी एड़ियों के बल पीछे हटे ता वह सफ़ में मिल जाएं और वे समझे कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नमाज़ के लिए बाहर तशरीफ़ ला रहे हैं परन्तु नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इशारा फ़र्मा कर यही कहा कि अपनी नमाज़ पूरी करो और पर्दा डाल दिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसी दिन फ़ौत हो गए।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् इज़न बाब اھل العلم والفضل احق بالامانۃ، हदीस 680)

हज़रत मुस्लेह मौऊद पहली रिवायत के अनुसार एक जगह वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम देहांत पाने वाले रोग में ग्रस्त हुए तो सख़्त कमज़ोरी के कारण नमाज़ पढ़ाने पर क़ादिर नहीं थे इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने नमाज़ पढ़ानी शुरू की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ आराम महसूस किया और नमाज़ के लिए निकले। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म देने के बाद जब नमाज़ शुरू हो गई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोग में कुछ ख़िफ़्फ़त महसूस की। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निकले कि दो आदमी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सहारा देकर ले जा रहे थे।" कहती हैं कि "और उस वक़्त मेरी आँखों के सामने वह दृश्य है कि शिद्दत-ए-दर्द की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दम ज़मीन से छूते जाते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखकर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इरादा किया कि पीछे हट आएं। इस इरादा को मालूम कर के रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ इशारा फ़रमाया कि अपनी जगह पर रहो। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वहां लाया गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास बैठ गए। इसके बाद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़नी शुरू की और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आपकी नमाज़ के साथ नमाज़ पढ़नी शुरू की और बाक़ी लोग हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की नमाज़ की इत्तिबा करने लगे।"

(सीरतुन नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, अनवारुल उलूम भाग 1 पृष्ठ506-507)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बारे में एक जगह इस तरह अरवा बिन ज़ुबैर ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पत्नी आदरणीया हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हो गए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त सख में थे अर्थात सख मुज़ाफ़ात में एक गांव है। यह ख़बर सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात की ख़बर पहुंची तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो तो वहां थे नहीं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मौजूद थे वह खड़े हुए और कहने लगे अल्लाह की क़सम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत नहीं हुए। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती थीं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहा करते थे कि अल्लाह की क़सम मेरे दिल में यही बात आई थी कि अल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़रूर ज़रूर उठाएगा ता कुछ आदमियों के हाथ पांव काट दे। इतने में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु आ गए और उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरा से कपड़ा हटाया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बोसा दिया और कहने लगे मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान हों। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िंदगी में भी और मौत के वक़्त भी पाक और साफ़ हैं। उस ज़ात की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है अल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कभी दो मौतें नहीं दिखाएगा। यह कह कर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बाहर चले गए और कहने लगे हे क़सम खाने

वाले ! ठहर जा। अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा कि ठहर जाओ। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बोलने लगे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बैठ गए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ुदा की प्रशंसा वर्णन की और कहा। أَلَا مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ، وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللهَ فَإِنَّ اللهَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ۔ देखो! जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पूजता था सुन ले कि मुहम्मद तो निसंदेह फ़ौत हो गए हैं और जो अल्लाह को पूजता था उसे याद रहे कि अल्लाह ज़िंदा है कभी नहीं मरेगा और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ये आयत पढ़ी। إِنَّكَ مَيِّتٌ وَّ إِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ (अल् ज़ुमर:31) तुम भी मरने वाले हो और वे भी मरने वाले हैं। फिर उन्होंने ये आयत पढ़ी। وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ(आले इमरान : 145) कि मुहम्मद केवल एक रसूल हैं आपसे पहले सब रसूल फ़ौत हो चुके हैं तो फिर क्या अगर आप फ़ौत हो जाएं या क़तल किए जाएं तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे और जो कोई अपनी एड़ियों के बल फिर जाए तो वह अल्लाह को कदापि नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा और अनक़रीब अल्लाह शुक्र करने वालों को बदला देगा। रावी कहते हैं कि यह सुन कर लोग इतना रोय कि हिचकियाँ बंध गईं।

(सही अल् बुख़ारी किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाब क़ौल अन्नबी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम لو كنت متخذا خليلا ، हदीस 3667-3668)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह की क़सम ऐसा मालूम हुआ कि गोया लोग उस वक़्त तक कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वह आयत पढ़ी जानते ही नहीं थे कि अल्लाह ने यह आयत भी नाज़िल की थी।

मानो समस्त लोगों ने उनसे यह आयत सीखी। फिर लोगों में से जिस आदमी को भी मैंने सुना यही आयत पढ़ रहा था। रावी कहते हैं। सईद बिन मुसय्यब ने मुझे बताया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अल्लाह की क़सम जूंही मैंने अबू बकर को यह आयत पढ़ते सुना मैं इस क़दर घबराया कि दहश्त के मारे मेरे पांव मुझे सम्भल न सके और मैं ज़मीन पर गिर गया। जब मैंने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को ये आयत पढ़ते सुना तो मैंने जान लिया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हो गए हैं।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् मग़ाज़ी बाब باب مرض النبیﷺ و وفاته ، हदीस 4454)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे इस हाल में कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह कह रहे थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत नहीं हुए और उस वक़्त तक फ़ौत नहीं होंगे जब तक कि अल्लाह मुनाफ़िक़ों को क़तल न कर दे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि वह अर्थात सहाबा यह सुनकर ख़ुशी का इज़हार करते थे और अपने सिरों को उठाते थे तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया। हे शख़्स निसंदेह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हो गए हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को सम्बोधित किया और कहा निसंदेह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हो गए हैं। क्या तू ने नहीं सुना कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि إِنَّكَ مَيِّتٌ وَّ إِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ (अल् ज़ुमर : 31) तुम भी मरने वाले हो और वे भी मरने वाले हैं और ये भी وَ مَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ (अल् अम्बिया : 35) और हमने किसी बशर को तुझसे पहले हमेशगी अता नहीं की। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मंच पर तशरीफ़ लाए और सम्बोधन किया। बहरहाल इस हदीस की तशरीह में अबू अब्दुल्लाह कुर्तबी वर्णन करते हैं कि इस बात में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की बहादुरी पर बहुत बड़ा तर्क है क्योंकि बहादुरी की इंतिहा यह है कि मसायब के नाज़िल होने के वक़्त दिल का साबित-क़दम रहना और मुस्लमानों पर उस वक़्त कोई मुसीबत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात की मुसीबत से बढ़ कर नहीं थी। अत: उस वक़्त आप अलैहिस्सलाम की बहादुरी और इलम ज़ाहिर हुआ।

(मवाहिबुल दुनिया भाग 4 पृष्ठ 547 अल् मक्तबा इस्लामिया 2004 ई.)

दोनों ही ज़ाहिर हुए। बहादुरी भी ज़ाहिर हुई कि सदमा को बर्दाश्त किया और क़ुरआन-ए-करीम की आयत की जो तशरीह की इस से इलम भी ज़ाहिर हुआ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "हदीस की पुस्तकों में और इतिहास में यह रिवायत दर्ज है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात का सहाबा रज़ियल्लाहु अंहो पर इस क़दर प्रभाव हुआ कि वे घबरा गए और कुछ से तो बोला भी नहीं जाता था और कुछ से चला भी नहीं जाता था और कुछ अपने हवास और अपनी अक़ल को क़ाबू में नहीं रख सके और कुछ पर तो इस सदमा का ऐसा असर हुआ कि वे चंद दिन में घुट घुट कर फ़ौत हो गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर इस सदमा का इस क़दर प्रभाव हुआ कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात की ख़बर को स्वीकार ही नहीं किया और तलवार लेकर खड़े हो गए और कहा कि यदि कोई व्यक्ति यह कहेगा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हो गए हैं तो मैं उसे क़तल कर दूँगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो मूसा अलैहिस्सलाम की तरह बुलाए गए हैं। जिस तरह वे चालीस दिन के बाद वापस आ गए थे इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ अरसा के बाद वापस तशरीफ़ लाएँगे और जो लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आरोप लगाने वाले हैं और मुनाफ़िक़ हैं उनको क़तल करेंगे और सलीब देंगे और इस क़दर जोश से आप अलैहिस्सलाम इस दावे पर डटे थे कि सहाबा रज़ियल्लाहु अंहो में से किसी को ताक़त नहीं हुई कि आप अलैहिस्सलाम की बात को रद्द करते। और आप अलैहिस्सलाम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस जोश को देखकर कुछ लोगों को तो विश्वास हो गया कि यही बात दरुस्त है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत नहीं हुए और उनके चेहरों पर ख़ुशी के आसार ज़ाहिर होने लगे। और या तो सिर डाले बैठे थे या ख़ुशी से उन्होंने सिर उठा लिए। इस हालत को देखकर कुछ दूर-अँदेश सहाबा रज़ियल्लाहु अंहो ने एक सहाबी को दौड़ाया कि वेह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को जो इस वजह से कि मध्य में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तबीयत कुछ अच्छी हो गई थी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञा से मदीना के पास ही एक गांव की तरफ़ गए हुए थे जल्द ले आएं' वापस बुलालाएं। बहरहाल "वह चले ही थे कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उनको मिल गए।" वापस आ रहे थे "उनको देखते ही उनकी आँखों से आँसू जारी हो गए" इन सहाबी को जो सूचना देने जा रहे थे "और आपने दर्द के जोश को काबू नहीं कर सके। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो समझ गए कि क्या विषय है और उन सहाबी से पूछा कि क्या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हो गए हैं? उन्होंने उत्तर दिया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जो शख़्स कहेगा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हो गए हैं मैं उस की गर्दन तलवार से उड़ा दूँगा। इस पर आप अलैहिस्सलाम'' हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के घर तशरीफ़ ले गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जिस्म मुबारक पर जो चादर पड़ी थी उसे हटा कर देखा और मालूम किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वास्तव में फ़ौत हो चुके हैं। अपने महबूब की जुदाई के सदमे से उनके आँसू जारी हो गए और नीचे झुक कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माथे पर" हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने "बोसा दिया और कहा कि ख़ुदा की कसम अल्लाह तआला तुझ पर दो मौतें जमा नहीं करेगा। तेरी मौत से दुनिया को वह नुक़्सान पहुंचा है जो किसी नबी की मौत से नहीं पहुंचा था। तेरी ज़ात सिफ़त से बाला है और तेरी शान वह है कि कोई मातम तेरी जुदाई के सदमे को कम नहीं कर सकता। अगर तेरी मौत का रोकना हमारी ताक़त में होता तो हम सब अपनी जानें देकर तेरी मौत को रोक देते।

यह कह कर कपड़ा फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऊपर डाल दिया और उस जगह की तरफ़ आए जहां हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु सहाबा रज़ियल्लाहु अंहो का हलक़ा बनाए बैठे थे और उनसे कह रहे थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत नहीं हुए बल्कि ज़िंदा हैं। वहां आकर आप अलैहिस्सलाम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि आप अलैहिस्सलाम ज़रा चुप हो जाएं परन्तु उन्होंने उनकी बात नहीं मानी और अपनी बात करते रहे। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक तरफ़ हो कर लोगों से कहना शुरू किया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वास्तव में फ़ौत हो चुके हैं। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को छोड़ कर आप रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट जमा हो गए और अंतत: हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को भी आप अलैहिस्सलाम की बात सुननी पड़ी। आप रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया जिस तरह पहले वर्णन हो चुका है कि'' وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ۔ يَاأَيُّهَا النَّاسُ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللهَ فَإِنَّ اللهَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ۔ अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी एक रसूल हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले सब रसूल फ़ौत हो चुके हैं फिर अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हो जाएं या क़तल हो जाएं तो क्या तुम लोग अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे। निसंदेह तू भी फ़ौत हो जाएगा और ये लोग भी फ़ौत हो जाऐंगे। हे लोगो जो कोई मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रसतिश करता था वह सुन ले कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हो गए और जो कोई अल्लाह की इबादत करता था उसे याद रहे कि अल्लाह ज़िंदा है और वह फ़ौत नहीं होता। जब आप अलैहिस्सलाम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो "ने मज़कूरा बाला दोनों आयात पढ़ीं और लोगों को बताया कि रसूलुल्लाह फ़ौत हो चुके हैं तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हों पर हक़ीक़त आशकार हुई और वे बे-इख़्तियार रोने लगे और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं वर्णन फ़रमाते हैं कि जब क़ुरआन की आयात से हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात साबित की तो मुझे यह मालूम हुआ कि मानों ये दोनों आयतें आज ही नाज़िल हुई हैं और मेरे घुटनों में मेरे सिर को उठाने की ताक़त नहीं रही। मेरे क़दम लड़खड़ाए और मैं बे-इख़्तियार शिद्दत सदमा से ज़मीन पर गिर पड़ा।"

(दावतुल अमीर, अनवारुल उलूम भाग 7 पृष्ठ 345 से 347)

इसी हवाले से मुस्लमानों की जो सर्व सहमती है इस के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद वर्णन फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले समस्त अम्बिया फ़ौत हो चुके हैं जिन में मसीह भी शामिल हैं। इस लिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात पर जब मुस्लमान घबरा गए और यह सदमा उनके लिए

नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त हो गया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसी घबराहट में तलवार खींच ली और कहा कि अगर कोई व्यक्ति यह कहेगा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वफ़ात पा गए हैं तो मैं उसकी गर्दन काट दूँगा। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत नहीं हुए बल्कि हज़रत मूसा की तरह ख़ुदा से मिलने गए हैं और फिर वापस आएँगे और मुनाफ़िक़ों को ख़त्म करेंगे फिर वफ़ात पाएँगे। मानो उनका यह मत था कि मुनाफ़िक़ जब तक ख़त्म न हों आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत नहीं हो सकते और चूँकि मुनाफ़िक़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात तक मौजूद थे इस लिए वह समझे कि आप फ़ौत नहीं हुए हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जो उस वक़्त मदीना के पास बाहर एक गांव में गए हुए थे तशरीफ़ लाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के घर गए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जिस्म मुबारक देखा। मालूम किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वास्तव में वफ़ात पा चुके हैं। इस पर फिर आप अलैहिस्सलाम वापस बाहर तशरीफ़ लाए और यह कहते हुए आए कि अल्लाह तआला रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दो मौतें नहीं देगा। अर्थात एक मौत जस्मानी और दूसरी मौत रुहानी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के साथ ही मुस्लमान बिगड़ जाएं। फिर आप अलैहिस्सलाम सीधे सहाबा की भीड़ में गए और लोगों से कहा कि मैं कुछ कहना चाहता हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तलवार लिए खड़े थे और यह इरादा कर के खड़े थे कि अगर किसी ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात का ऐलान किया तो मैं उसको क़तल कर दूँगा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हुए और उन्होंने लोगों को वही बात की कि مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ ، وَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ اللهَ فَإِنَّ اللهَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ کہ कि जो व्यक्ति मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इबादत करता था वह सुन ले कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हो चुके हैं और जो कोई व्यक्ति अल्लाह तआला की इबादत करता था वह ख़ुश हो जाए कि अल्लाह तआला ज़िंदा है और कभी फ़ौत नहीं होगा।

फिर आप अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम की ये आयत पढ़ी जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ اَفَائِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰى اَعْقَابِكُمْ۔ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के रसूल थे और आपसे पहले जितने भी रसूल गुज़रे हैं सब फ़ौत हो चुके हैं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्यों नहीं फ़ौत होंगे। अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हो जाएं या क़तल किए जाएं तो क्या तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे और इस्लाम को छोड़ दोगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब क़ुरआन-ए-करीम की यह आयत हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने पढ़ी तो मेरी आँखें खुल गईं और मुझे यूं मालूम हुआ कि यह आयत अभी नाज़िल हुई है और मुझ पर ज़ाहिर हो गया कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हो गए हैं और मेरे पांव काँप गए और मैं ज़मीन पर गिर गया। यह वर्णन करके हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि यह एक ही इजमा सहाबा का है क्योंकि उस वक़्त सारे सहाबा मौजूद थे और वास्तव में ऐसा वक़्त मुस्लमानों पर पहले कभी नहीं आया क्योंकि फिर कभी मुस्लमान इस तरह जमा नहीं हुए। इस इजतिमा में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह आयत पढ़ी कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम केवल अल्लाह तआला के एक रसूल हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले जिस क़दर अल्लाह तआला के रसूल आए हैं वे सब के सब फ़ौत हो चुके हैं। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़ौत होना भी कोई काबिल-ए-ताज्जुब बात नहीं और सारे के सारे सहाबा ने आपके साथ इत्तिफ़ाक़ किया।

(उद्धरित मसला वह्यी नबुव्वत के मुताल्लिक इस्लामी नज़रिया, अनवारुल उलूम भाग 23 पृष्ठ 327-328)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से इसी बात को वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि

"हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का इस उम्मत पर इतना बड़ा एहसान है कि इस का शुक्र नहीं हो सकता।

अगर वह समस्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा को मस्जिद नब्वी में इकट्ठे कर के यह आयत न सुनाते कि समस्त पूर्व के नबी फ़ौत हो चुके हैं तो यह उम्मत हलाक हो जाती क्योंकि ऐसी सूरत में इस ज़माने के मुफ़सिद उल्मा यही कहते कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा का भी यही मज़हब था कि हज़रत-ए-ईसा ज़िंदा हैं परन्तु अब सिद्दीक़ अकबर की आयत पेश करने से इस बात पर समस्त सहाबा का सहमत हो जाना कि समस्त पिछले नबी फ़ौत हो चुके हैं बल्कि इस इजमा पर शे'र बनाए गए। अबू बकर की रूह पर ख़ुदा तआला हज़ारों रहमतों की बारिश करे उसने समस्त रूहों को हलाकत से बचा लिया और इस इज्मा में समस्त सहाबा शरीक थे। एक फ़र्द भी उनमें से बाहर नहीं था। और ये सहाबा का पहला इजमा था और अत्यधिक क़ाबिल शुक्र कार्रवाई थी। और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और मसीह मौऊद की आपसी एक समानता है और वह यह कि ख़ुदा तआला का वादा क़ुरआन शरीफ़ में दोनों की निसबत यह था कि जब एक ख़ौफ़ की हालत इस्लाम पर तारी होगी और सिलसिला मुर्तद होने का शुरू होगा तब उनका ज़हूर होगा अत: हज़रत अबू बकर और मसीह मौऊद के वक़्त में ऐसा ही हुआ। अर्थात हज़रत अबू बक़र के वक़्त में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद सदहा जाहिल अरब मुर्तद हो गए थे। और केवल दो मस्जिदें बाक़ी थीं जिनमें नमाज़ पढ़ी जाती थी। हज़रत अबू बकर ने दुबारा उनको इस्लाम पर क़ायम किया ऐसा ही मसीह मौऊद के वक़्त में कई लाख इन्सान इस्लाम से मुर्तद हो कर ईसाई बन गए और ये दोनों हालात क़ुरआन शरीफ़ में वर्णित हैं अर्थात भविष्यवाणी के तौर पर उनका वर्णन है।"

(ज़मीमा बराहीन-ए-अहमदिया भाग 5, रुहानी ख़ज़ायन भाग 21 पृष्ठ 285 - 286 हाशिया)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के बारे में आता है कि जब सहाबा कराम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात का इलम हो गया तो अंसार सक़ीफ़ा बनी साएदा में एकत्र हुए। इस इज्तेमा में मसला ख़िलाफ़त पर बात चीत हुई। अंसार ख़ज़रज के राहनुमा साद बिन उबादा के गर्द जमा हो गए।

(सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़सीत और कारनामे अज़ अली मुहम्मद सलाबी पृष्ठ 174)

हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु उन दिनों बीमार थे। उन्होंने अंसार की क़ुर्बानीयों और ख़िदमते इस्लाम का तफ़सीली वर्णन करते हुए उन्हें ख़िलाफ़त का हक़दार क़रार दिया परन्तु अंसार ने हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु को ही ख़िलाफ़त के लिए उचित क़रार दे दिया परन्तु अभी अंसार ने उनकी बैअत भी नहीं की थी कि उनमें से ही किसी ने यह प्रश्न कर दिया कि अगर मुहाजिरीन ने उनकी ख़िलाफ़त को स्वीकार नहीं किया तो क्या होगा? इस पर एक आदमी ने तजवीज़ दी कि एक आदमी अंसार में से और एक आदमी मुहाजिरीन में से ख़लीफ़ा हो परन्तु हज़रत साद बिन उबादा ने उसे बनू ओस की कमज़ोरी क़रार दिया। जब अंसार सक़ीफ़ा बनू साद में ख़िलाफ़त के सम्बन्ध में बेहस कर रहे थे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे बड़े बड़े सहाबा किराम मस्जिद नब्वी में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विसाल के सानेहा अज़ीम के बारे में वर्णन कर रहे थे। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे अहल-ए-बैत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तजहीज़-ओ-तकफ़ीन के इंतिज़ामात में व्यस्त थे। किसी को ख़िलाफ़त के बारे में होश नहीं था और इस बात से बे-ख़बर थे कि अंसार इस मसला पर ग़ौर करने के लिए जमा हो चुके हैं और अंसार में से किसी को अमीर चुनना चाहते हैं।

(सिद्दीक़ अकबर, मुहम्मद हुसैन हैकल, अनुवादक अंजुम सुलतान शहबाज़, पृष्ठ 85-86 शिरकत प्रिंटिंग प्रैस लाहौर)

तबक़ाते कुबरा में लिखा है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हु के पास तशरीफ़ लाए और कहा कि अपना हाथ बढ़ाईं ताकि मैं आप अलैहिस्सलाम की बैअत करूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़बान मुबारक से आप अलैहिस्सलाम को इस उम्मत का अमीन क़रार दिया गया है। इस पर हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा जब से आप अलैहिस्सलाम ने इस्लाम क़बूल किया है मैंने इस से पहले कभी आप में ऐसी ग़फ़लत वाली बात नहीं देखी। क्या तुम मेरी बैअत करोगे जबकि तुम में सिद्दीक़ और सानी इसनेन अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मौजूद हैं।

(अल् तब्कातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 135 ज़िक्र बैअत अबी बक़र, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत, लुबनान 1990 ई.)

इसी बात चीत के दौरान उन्हें इजतिमा अंसार की सूचना मिली। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को अंदर पैग़ाम भेज कर बुलाया कि एक ज़रूरी काम है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने तजहीज़ और तकफ़ीन की मस्रूफ़ियत का कारण बता कर के बाहर आने से इंकार कर दिया। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुबारा पैग़ाम भेजा। एक ऐसी फ़ौरी बात पेश आई है कि आप अलैहिस्सलाम की मौजूदगी वहां ज़रूरी है जिस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बाहर तशरीफ़ लाए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तजहीज़-ओ-तकफ़ीन से इस वक़्त और कौन सा अहम काम है जिसके लिए तुमने मुझे बुलाया है? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा आप अलैहिस्सलाम को पता है कि अंसार सक़ीफ़ा बनू साद में जमा हैं और इरादा कर रहे हैं कि हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा बना दें? उनमें से एक व्यक्ति ने यह कहा कि एक अमीर हम में से हो और एक अमीर क़ुरैश में से। यह सुनते ही हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ सक़ीफ़ा बनू साद पहुंचे। वहां अभी बेहस जारी थी। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु उनके मध्य जा कर बैठ गए।

(हज़रत सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल पृष्ठ 87-86 शिरकत प्रिंटिंग प्रैस लाहौर)

(सय्यदना सिद्दीक़ अकबर अज़ अल् हाज हकीम ग़ुलाम नबी पृष्ठ 72-73 प्रकाशन अदबीयात लाहौर)

एक रिवायत में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम अंसार की तरफ़ चल पड़े जब हम उनसे क़रीब पहुंचे उनमें से दो सालेह आदमियों उवैम बिन साएदा और मान बिन अद से मुलाक़ात हुई। इन दोनों ने अंसार के इरादे से उनको अवगत किया। फिर प्रश्न किया। आप लोग कहाँ जा रहे हैं? उन्होंने कहा हम अपने

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 31 March 2022 Issue No.13

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

अंसारी भाईयों के पास जा रहे हैं। इन दोनों ने कहा उनके पास जाना ज़रूरी नहीं आप लोग ख़ुद विषय तै कर लें। कहते हैं मैंने कहा अल्लाह की क़सम हम ज़रूर उनके पास जाऐंगे।

(उद्धरित सही बुख़ारी किताबुल رجم الحبلى من الزنا....، हदीस 6830)
(सही बुख़ारी किताब अल् मग़ाज़ी हदीस 4021)

बहरहाल वह गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हम अंसार के पास पहुंचे। मैंने अपने दिल में कुछ कहने के लिए एक मज़मून सोचा था कि अंसार के सामने उसे वर्णन करूँगा। अत: जब मैं उनके पास पहुंचा और बात शुरू करने के लिए आगे बढ़ा परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुझसे कहा ठहर जाओ यहां तक कि मैं बात कर लूं। इसके बाद जो तुम्हारा जी चाहे वर्णन करना। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बोलना शुरू किया और जो बात मैं कहना चाहता था वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन कर दी बल्कि इस से भी ज़्यादा आप अलैहिस्सलाम ने कह दिया।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 242 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत,1987 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो तक़रीर की थी उस का संक्षिप्त वर्णन यह है। अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने तक़रीर शुरू की। अल्लाह की प्रशंसा के बाद कहा निसंदेह अल्लाह ने अपनी मख़लूक़ की तरफ़ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को रसूल और अपनी उम्मत का निगरान बना कर भेजाता कि वे अल्लाह की इबादत करें और उसकी तौहीद का इक़रार करें हालाँकि इस से पहले वे अल्लाह के सिवा मुख़्तलिफ़ माबूदों की इबादत करते थे और कहते थे कि यह माबूद अल्लाह के हुज़ूर उनकी शफ़ाअत करने वाले और नफ़ा पहुंचाने वाले हैं हालाँकि वे पत्थर से तराशे गए थे और लक्कड़ी से बनाए जाते थे। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह आयत पढ़ी وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ (यूनुस : 19) और वे अल्लाह के सिवा उस की इबादत करते हैं जो न उन्हें नुक़्सान पहुंचा सकता है और न लाभ पहुंचा सकता है और वे कहते हैं कि ये सब अल्लाह के हुज़ूर हमारी शफ़ाअत करने वाले हैं। نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى । (अल् ज़ुमर : 4) कि हम इस मक़सद के सिवा उनकी इबादत नहीं करते कि वे हमें अल्लाह के क़रीब करते हुए क़ुरब के ऊंचे स्थान तक पहुंचा दें। अरबों को यह बात कष्टदायक लगी कि वे अपने बाप दादा के धर्म को छोड़ दें। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ये आयतें पढ़के फ़रमाया कि अरबों को यह बातकष्टदायक लगी कि वे अपने बाप दादा के धर्म को छोड़ दें। अत: अल्लाह ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क़ौम में से अव्वलीन मुहाजेरीन को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तसदीक़ के लिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने के लिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सहानुभूति के लिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ अपनी क़ौम की सख़्त कष्ट देने और झूठ बोलने के वक़्त डटे रहने के लिए विशेष कर लिया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया हालाँकि समस्त लोग उनके मुख़ालिफ़ थे और उन पर ज़ुलम करते थे परन्तु बावजूद अपनी कम संख्या के और समस्त लोगों के ज़ुलम और अपनी क़ौम के उनके ख़िलाफ़ इकट्ठे हो जाने के वे कभी भयभीत नहीं हुए। और वे पहले थे जिन्हों ने ज़मीन में अल्लाह की इबादत की और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए। और वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दोस्त और ख़ानदान वाले हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद लोगों में से इस मन्सब के सबसे ज़्यादा हक़दार हैं। इस मुआमला में सिवाए ज़ालिम के और कोई उनसे तनाज़ा नहीं करेगा। हे अंसार के गिरोह और तुम वो हो जिनकी धर्म में फ़ज़ीलत और इस्लाम में सबक़त ले जाने के सम्बन्ध में इंकार नहीं किया जा सकता। अल्लाह के दीन और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मददगार बनने की वजह से अल्लाह तुमसे प्रसन्न हो गया और उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिज्रत भी तुम्हारी तरफ़ ही रखी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अक्सर पत्नियाँ और अस्हाब तुम्हारे यहां रहते हैं। मुहाजिरीन अव्वलीन के बाद हमारे नज़दीक तुम्हारे मर्तबा का कोई भी नहीं।

अमीर हम में होंगे और तुम वज़ीर। प्रत्येक महत्वपूर्ण मुआमले में तुमसे मश्वरा लिया जाएगा और तुम्हारे बग़ैर अहम विषयों के सम्बन्ध में निर्णय नहीं करेंगे।

(तारीख़ अलतिबरी भाग 2 पृष्ठ 243-242 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत, 1987 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सक़ीफ़ा बनू साएदा में जो तक़रीर की थी सीरत हल्बिया में इस का वर्णन इस तरह मिलता है आपने फ़रमाया। अम्मा बादहू जहां तक ख़िलाफ़त का मामला है तो अरब के लोग इस को सिवाए क़ुरैश के किसी दूसरे क़बीले के लिए क़बूल नहीं करेंगे। क़ुरैश के लोग अपने हसब-ओ-नसब के एतबार से और अपने वतन के एतबार से जो मक्का है सबसे अफ़ज़ल और सर्वोत्तम हैं। हम नसब में समस्त अरबों से जुड़े हुए हैं क्योंकि कोई भी क़बीला ऐसा नहीं जो किसी न किसी तरह क़ुरैश से रिश्ता करीब होने का न रखता हो। हम मुहाजिरीन वे लोग हैं जिन्हों ने सबसे पहले इस्लाम क़बूल किया। हम ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बिरादरी और ख़ानदान के लोग और आपके रहमी रिश्तेदार हैं। हम नबुव्वत वाले हैं और ख़िलाफ़त के हक़दार हैं।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 504-505 बाब مايذكر فيه مدة مرضه، وما وقع فيه، وفاته आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

इन्ही वाक़ियात का वर्णन करते हुए इमाम अहमद बिन हम्बल ने अपनी मुसनद में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का किरदार वर्णन किया है और यह वर्णन करने के बाद कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात पर आकर मुस्लमानों में तक़रीर की और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात का ऐलान किया। फिर वर्णन हुआ है रावी कहते हैं कि इस के बाद (तक़रीर करने के बाद और वफ़ात का ऐलान करने के बाद) हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तेज़ी के साथ सक़ीफ़ा बनू साद की तरफ़ रवाना हुए यहां तक कि उनके पास पहुंचे तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बात चीत शुरू की और आप अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम में अंसार के विषय में जो कुछ नाज़िल हुआ इस में से कुछ नहीं छोड़ा और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंसार की फ़ज़ीलत के बारे में जो कुछ फ़रमाया था वह सब वर्णन किया। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया। तुम लोगों को इलम है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि अगर लोग एक वादी में चले और अंसार दूसरी वादी में तो मैं अंसार की वादी में चलूँगा।

फिर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु को सम्बोधित करके हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि हे साद तुझे इलम है कि तू बैठा हुआ था जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ख़िलाफ़त के हक़दार क़ुरैश होंगे।

लोगों में से जो नेक होंगे वह क़ुरैश के नेक लोगों के अधीन होंगे और जो झूठे होंगे वे क़ुरैश के फ़ाजिरों के अधीन होंगे। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि आप अलैहिस्सलाम ने सच कहा। हम वज़ीर हैं और आप लोग उमरा हैं।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल, मस्नद अबी बक्र, हदीस नंबर 18, भाग 1 पृष्ठ 159-158, दारुल हदीस काहिरा 1994 ई.)

यह वर्णन इन शा अल्लाह आगे चलता रहेगा। दुनिया की जो मौजूदा हालात हैं इस बारे में भी दुआ के लिए कहना चाहता हूँ।

यह इंतिहाई ख़तरनाक हो चुके हैं और हो सकते हैं, बढ़ते जा रहे हैं। केवल एक मुल्क नहीं बल्कि बहुत से देश इस में शामिल हो जाऐंगे अगर यह इसी तरह बढ़ता रहा और फिर उसके ख़ौफ़नाक अंजाम का प्रभाव नसलों तक रहेगा।

ख़ुदा करे कि ये लोग ख़ुदा तआला को पहचानने वाले हों और अपनी दुनियावी ख़ाहिशात की तसकीन के लिए इन्सानों की जानों से न खेलें। बहरहाल हम तो दुआ कर सकते हैं और करते हैं, समझा सकते हैं और समझाते हैं और एक अर्से से हम यह काम कर रहे हैं लेकिन बहरहाल इन दिनों में खासतौर पर अहमदियों को बहुत दुआ करनी चाहिए।

अल्लाह तआला जंग के जो ख़ौफ़नाक हालात हैं और यह जो तबाह कारियां हैं जिनका तसव्वुर भी इन्सान नहीं कर सकता कि ऐसी तबाह कारियां हो सकती हैं। अल्लाह तआला उनसे इन्सानियत को बचा के रखे।

नमाज़ के बाद में एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो आदरणीय ख़ुशी मुहम्मद शाकिर साहिब मुरब्बी सिलसिला का है। पिछले दिनों उनहत्तर 69 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ूज़ उनके दादा हज़रत मौलवी करीम बख़्श साहब रज़ियल्लाहु अन्हु सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा से हुआ। उन्होंने ताऊन का निशान देख कर बैअत की थी। इसी तरह हज़रत मौलवी करीम बख़्श साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी फ़ज़ल बी-बी साहिबा के भाई हज़रत हाजी मुहम्मद अब्दुल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की सआदत हासिल की थी। हज़रत हाजी मुहम्मद अब्दुल्लाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम तारीख़-ए-अहमदियत भाग 8 में सहाबा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फ़हरिस्त में तेईसवें नंबर पर दर्ज है।

शेष पृष्ठ 7 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad